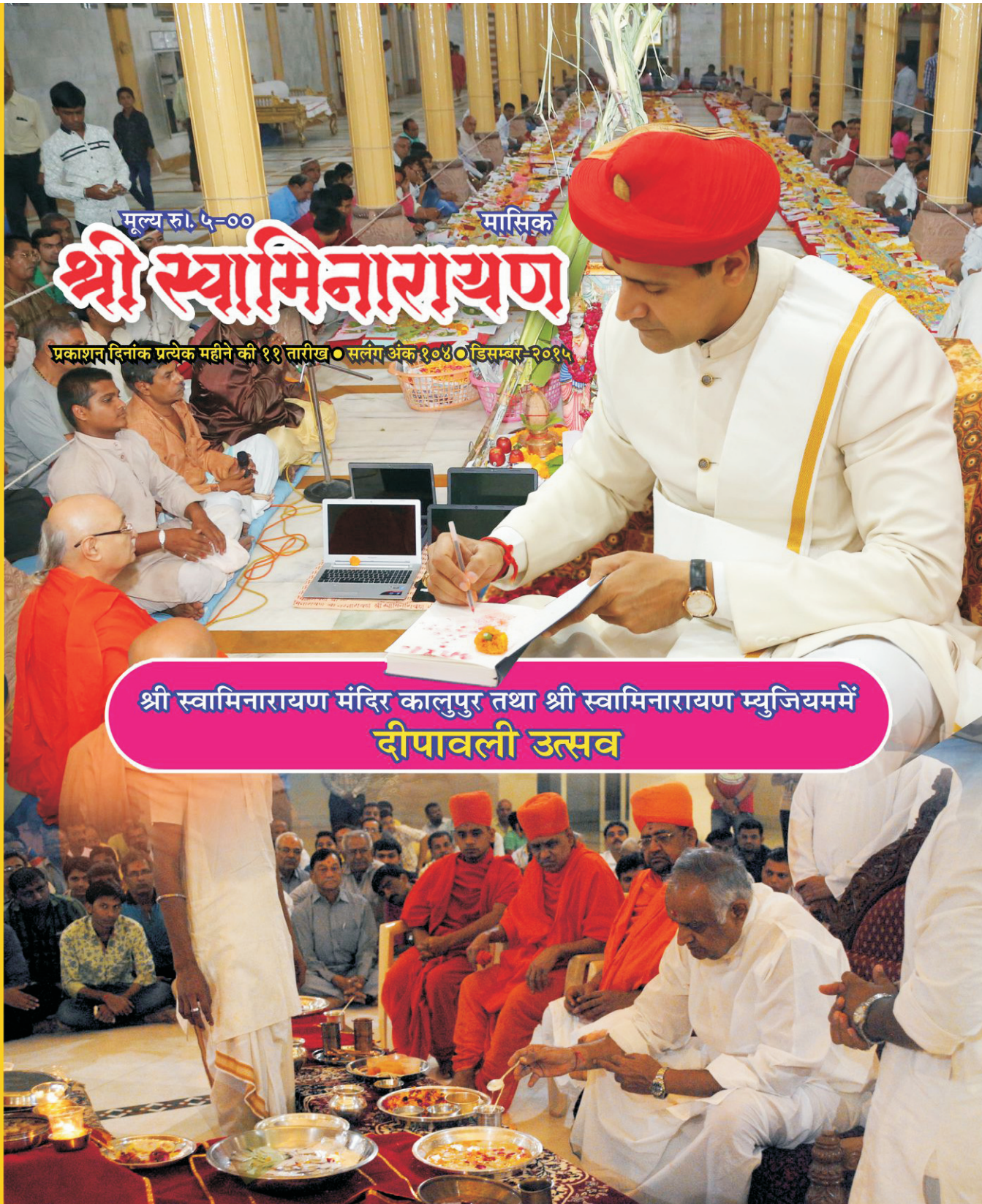

मूल्य रु. ५-०० मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक १०४ • डिसम्बर-२०१५

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर तथा श्री स्वामिनारायण म्युजियममें
दीपावली उत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर कानपुर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा सभा को संबोधित करते हुए छपैया के महंत स्वामी तथा यजमान को सन्मानित करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (२) श्री स्वामिनारायण मंदिर डडुसर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्र प्रसादजी महाराजश्री । (३) डडुसर गाँव में मुक्तराज गलुजी के प्रसादी के स्थान पर चरणारविंद सहित छत्री का उद्घाटन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (४) कालीगाँव अमदावाद में अन्नकूट की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (५) कालीगाँव मंदिर में सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुए हरिभक्त ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ९ ● अंक : १०४

डिसम्बर-२०१५

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	उनावा की रणीयात कुंवर बा	०६
०४.	चेष्टा के पदों से दिव्य सुख की अनुभूति	१०
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१२
०६.	सत्संग बालवाटिका	१४
०७.	भक्ति सुधा	२०
०८.	सत्संग समाचार	२५

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

आत्मनिवेदनम्

जो भगवान के भक्त हों वे जब भगवान की मानसी पूजा करने बैंठे या भगवान का ध्यान करें उस समय उनका जीव जिन-जिन खराब देशकालादिक के योग से पंचविषय से पराभव हुआ हो अथवा काम, क्रोध, लोभादिक के योग से पराभव हुआ हो, उन सभी की उसे स्मृति हो आती है। जिस तरह कोई शूरवीर पुरुष हो वह संग्राम में जाकर घायल होकर वापस आकर खाट पर सोता है, बाद में जब तक उसके घाव पर पट्टा नहीं बांधाजाता तब तक उसे आराम नहीं मिलता, वेदना होती रहती है, निद्राभी नहीं आती। लेकिन जब घाव पर मलहम पट्टा लगजाता है तब धीरे-धीरे दर्द कम होने लगता है और निद्राभी आजाती है। इसी तरह खराब देश, काल, संग तथा क्रिया के योग से पंच विषय की जो घाव लगी है वह जब नवधा भक्ति का संयोग हो जाता तब धाव भर जाती है और पंच विषय की पीड़ा भी कम हो जाती है, धीरे धीरे पंचविषय का स्मरण कम होने लगता है। इसी को पंचविषय के ऊपर मलहम पट्टा समझें या भजन स्मरण के अंग को पुष्ट करने का साधन समझें।

प्रिय भक्तों ! विशेष ध्यान रखने की वात यह है कि, खराब पंचविषय की लत न लगे इसके लिये महाराज से प्रार्थना करे कि हे महाराज ! आप हमारी पंच विषयों से रक्षा करें।

१६ दिसम्बर सें पवित्र धनुर्मास प्रारंभ हो रहा है। अहमदाबाद में रहने वाले हरिभक्तों को श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में तथा धर्मकुल की उपस्थिति में प्रातः कालीन धुन का लाभ लेने से वंचित न रहे ऐसा निवेदन किया जा रहा है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(नवम्बर-२०१५)

१ डुमाली गाममें पदार्पण।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली–पदार्पण।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद–समूह शारदापूजन अपने वरद् हाथों से किये।

१२ नूतन वर्ष–परम कुपालश्री नरनारायणदेव की श्रगार आरती तथा अन्नकूट की आरती अपने वरद् हाथों से सम्पन्न किये।

१३ पडमा गाममें कथा प्रसंग पर पदार्पण।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापूनगर पदार्पण।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया बालस्वरुप कष्टभंजनदेव के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री स्वामिनारायण [illegible]गार नूतन मंदिर के खात पूजन प्रसंग पर पदार्पण।

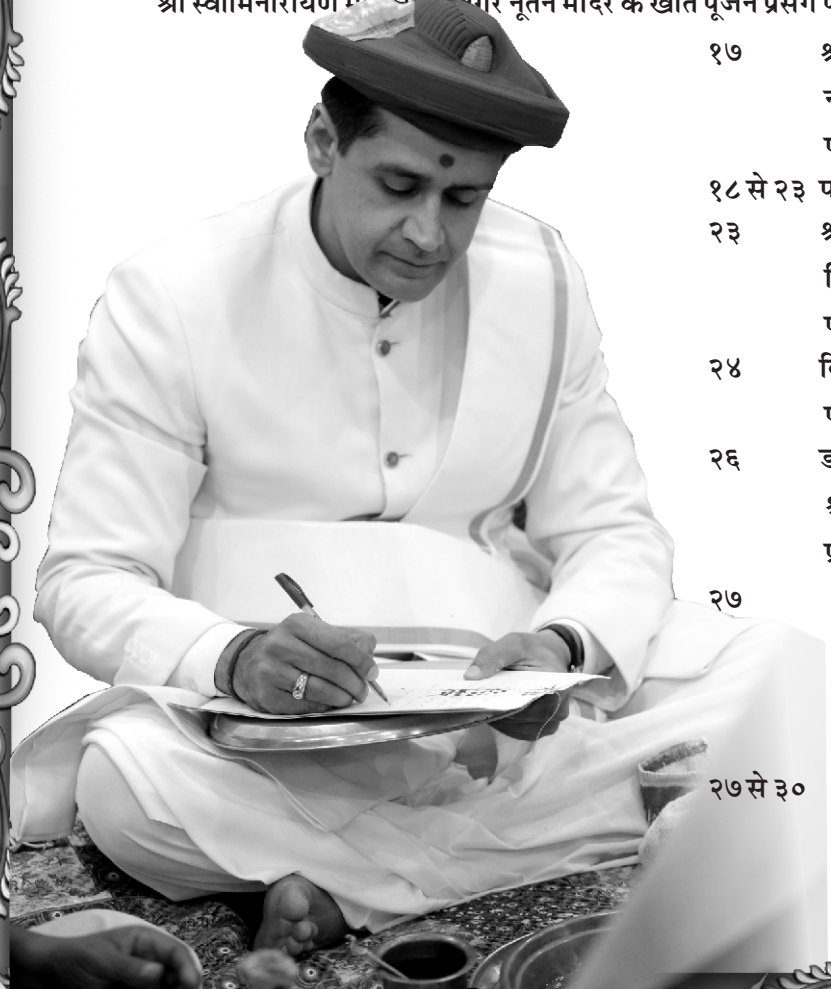

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर नाथद्वारा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१८ से २३ पर्थ (ओस्ट्रेलीया) पदार्पण।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर सिध्धपुर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२४ विलोदरा गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण।

२६ डडुसर (मुक्तराजगलुजी का) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२७ से ३० प्रयागराज (इल्हाबाद) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

उनावा की रणीयात कुंवर बा

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

भगवान स्वामिनारायण ने उत्सवों में उनावा एक ऐसा प्रेमालु गाँव था कि उस गाँव को लोगो की प्रेमालुता देखकर स्वयं महाराजश्री गदगद हो जाते थे । जब-जब महाराज पधारने वाले होते तब-तब गाँव के रावल वास के सभी रावल ढोल, नगारा, मंजीरा लेकर, दरजी लोग ध्वजा-पताका लेकर, नापित लोग जलती मसाल लेकर निकल पड़ते थे . दरबार लोग महाराज के आने वाले को गुलाबजल से छिटकाव करते थे । गाँव के मुखिया रामदास तथा उनके कुलगुरु लाभशंकर मेहता तथा उनके जैसे पचासो भक्त नग्गे पाँव महाराज का स्वागत करने के लिये निकल पड़ते थे । यह देखकर पूरा गाँव नंगे पग निकल पडता था । गाँव में एक बालक भी नहीं रहता सभी उत्सव में भाग लेते थे । बालक को दूधपिलाने वाली माताये भी अपने बालक को साथ में लेकर महाराज के दर्शनार्थ निकल पड़ती थी ।

एकबार ऐसा हुआ कि महाराज के आने का समाचार उनावा विलंब से पहुंचा । इससे महाराज सदारा से निकलकर सीधे रामदास बापू के खेत में आ पहुँचे । वर्तमान में जहाँ पर कोठारी के तेल का कूंआ है वहीं पर रामदास बापू फूल तोड़ रहे थे । महाराज को एकाएक देखकर बड़े आश्चर्य में पड गये । ''अरे मेरे प्रिय महाराज ? इस तरह एकाएक प्रगट होते हैं ??? परंतु रामदास बापू महाराज के आने पर उत्सव के बिना कैसे रह सकते हैं । उन्होंने अगल बगल के खेतों में काम करने वालों को चिल्लाकर कह दिया कि महाराज यहाँ आये हैं, यह वाणी द्रुतगति से उनावा तक पहुँच गयी । इतना ही नहीं बालवा, आमजा, चांदीसणा, तथा प्रतापपुरा तक पहुंच गयी । अब क्या पूछना ? पांच गाँव के दर्शनार्थी भक्त अपनी सुधबुधभूलकर छोटे रास्तों से, खेतों में होकर रामदास बापू के खेत में आ पहुंचे । सभी के पैर कांटो से बिधगये थे । इतना सब कुछ के बाद भी जो भी वेदना थी वह महाराज के दर्शन से समाप्त हो गई । सभी के प्रेमाधिक्य को देखकर महाराज रो पडे । महाराजने कहा कि हे भक्तों ? आप सभी का प्रेम देखकर आप सभी को कुछ कहने के लिये मेरे पास आज शब्द नहीं है । आज आप लोग गोपियों का प्रेम, राजा जनक का विदेहीपना, गोपालानंद का अष्टांगयोग को भी पीछे कर दिया है । आप लोगो के इस प्रेम के बदले में मेरे पास कुछ भी नहीं है जो दे सकूँ । मैं आप सब को क्या दू । आप सभी को वचन देता हूं कि उनावा, बालवा, उत्तत्जा, चांदीसणा, प्रतापपुरा, इत्यादि गाँवो से जोभी भक्त घायल होकर आये है उन सभी को अन्त समय में लेने आऊंगा । अनंत मुक्तों के साथ रखकर अनंतकाल तक दर्शन का सुख प्रदान करुँगा ।

उस समय महाराज के साथ स.गु. गोपालानंद स्वामी भी थे । वे बड़े आश्चर्य के साथ महाराज से पूछे कि हे महाराज ! इन भक्तों को जो प्रभु के दर्शन की तन्मयता में वेदना भूल कर देहातीत की स्थिति प्राप्त हुई है वह अष्टांग योग ज्ञान से भी अधिक है, यह ज्ञान किसने दिया होगा ??? तब हंसते हुए महाराजने कहा कि मेरी मौसी ने ?

महाराज ''रणीयातबा'' को मौसी कहते थे । कारण यह कि जेतलपुर की गंगामां की वे बहन थी । विक्रम संवत १८१२ भाद्र शुक्ल नवमी रणीयाती नवमी शुक्रवार ता. ३-९-१७५६ के पवित्र दिन को वाणीयावाले वेदपाठी ब्राह्मण की पुत्री ऐसी प्रेमकुंवरबा की कोंखसे उनका जन्म हुआ था । गुरु रामानंद स्वामी के अत्यन्त अंतरंग गृहस्थ भक्त तथा उत्तर गुजरात के राजधरानो में से नारदीपुर के भूदरजी महेता की वे प्यारी पुत्री थी । नारदीपुर में लंबेनारायण का आश्रम है वहाँ पर नागर ब्राह्मणो की संस्कृत पाठशाला थी । वहीं पर चार वर्ष तक संस्कृत का अभ्यास करके ''कोविद कन्या''

तथा रसनिर्झरणी इत्यादि की प्रतिष्ठा प्राप्त की थी । अपने पिता के गुरु रामानंद स्वामी के साथ यदा कदा आने वाले बेचर रावल ने काशी की प्रकांड तथा महामहोवाध्याय की डिग्री प्राप्त की थी । इसके अलांबा उस जमाना में उन्हें बहुत प्रतिभाशाली कहा जाता था । इसी लिये वे रणीयात बा को खूब पसंद थे । पिताजी की ईच्छा कम थी लेकिन रामानंद स्वामी के दबाव में आकर स्वंय से २५ वर्ष बड़े बेचर रावल के साथ संवत १९२९ अक्षयतृतीया को विवाह हुआ था ।

उनका विवाह उनावा के ब्रह्मपुरी नामक उज्जड मुहल्ले में हुआ था । आज से दो हजार बहत्तर वर्ष पूर्व राजावीर विक्रम ने ३६५ नारीयों का निर्माण करके नागर ब्राह्मणों को दी थी । इसके बदले में नागर ब्राह्मण अपनी (श्रुचि-भ्रवा) तथा बरछी द्वारा राजा के सार्व भौमित्व का रक्षण तथा राज्य का परिचालक करते थे । प्रत्युयकार के रुप में राजाकी कुल कुलता के लिये नवरात्रि के अन्तिम दिन आद्याशक्ति का शुद्ध तथा पवित्र अहिंसामय यज्ञ करते ।

रणीयात बा के ससुराल वाले रावल कुटुंब ब्राह्मणो का मुखिया था इसलिये मागादिकर्म कराने का सम्पूर्ण उत्तर दायित्व उनके श्वसुर पर रहता था । उनके बड़े श्वसुर अनंतराम महेता हिमांचल प्रदेश के ''कागडाधाम'' में विद्याभ्यास करने गये थे । वहाँ से आते समय जग विख्यात ''ज्वालामुखी माता'' को प्रज्वलित साथ लाये थे । उस अग्नि को राजावीर विक्रम के रक्षार्थ ब्रह्मपुरी केनागर ब्राह्मण जिस रात्रि में हवन करते उसी कुंड में प्रतिष्ठित कर दिये । आद्याशक्ति ज्वाला की शक्ति और बढ गयी । गाँव के लोग अपनी जो भी समस्या होती उसके लिये यज्ञ में हवन के लिये थी की मान्यता रखते तो उनके सभी काम पूरे हो जाते । १०० गाँव तक माता की प्रतिष्ठा फैल गयी । इससे प्रतिदिन हवन होने लगा । यही हवन जो अहिंसामय था वह धीरे धीरे हिंसामय हो गया इसकी किसी को खबर तक नहीं पडी । मध्यरात्रि में दूरदूर से राजा आते और पशुबलि करके चले जाते । सबसे बड़ी बात तो तब हुई जब राजस्थान को एक राजा सेना के साथ आता और अपने सैनिक की बली चढा देता । स्थानिक राजाओ को यह अच्छा नहीं लगता था । वे परवश थे वह इसलिये कि उनके पास सैन्यबल नहीं था । सादरा के पोलिटिकल एजन्ट को गवर्नर का यह आदेश था कि किसी भी धार्मिक झगड़े में ब्रिटिश सैन्य का उपयोग नही करना । प्रजा लाचार थी । लेकिन रणीयात बा लाचार नहीं थी । वे अपने पिता के पास राजकारण भी सीखी थी । अपनी नीतमत्ता से पीपलज के टाकोर रुपाल, नारदीपुर तथा वाणीया वेडा के राजा थे, उन्ही के यहाँ व्यवस्था संभालने वाले की पुत्री थी प्रेमकुंवर बा । (रडीयातबा, गंगाबा तथा कलशीबा की माताजी) प्रेमकुवंरबा का कन्यादान पीपलज के ठाकोर साहबने किया था ।

इसलिये रणीयातबा उन्हें मामा कहती । एक दिन बेचर रावल तथा रणीयातबा पीपलज के ठाकोर साहेब के दरबारगढ में पहुंच गई . उस समय भोजन का समय था । तीन थाली और लगी । रणीयातबा रसोई में से एक चुटकी धूल मंगवाकर अपनी थाली के एक स्थान पर रख दीं । वह राजा बड़े आश्चर्य के साथ पूछा ऐसा क्यों करी ये धूल खाना है या और कुछ ? रणीयात बा ने शब्द बाण मारा ''हाँ मामा'' जिस भांजी का मामा वीस-वीस गाँवका धनी हो उसी भांजी के गाँव में बाहर से आकर कोई अन्य राजा मान की आहुती दे, तो भांजी धूल नहीं खायेगी तो और क्या करे । इस रहस्य को समझाया । यह सुनते ही मामा थाली का भोजन छोड़कर, हाथ धोकर, घोडे पर चढकर बडोदरा कूआ राजबा के घर पहुँच गये । राजबा ठाकोर साहेब की सगी बहन थी । इसके साथ ही वडोदरा स्टेट को राजघराने के दामजी गायकवाड की सबसे छोटी रानी थी । मौसी के यहाँ (इन्दौर में) रहकर अंग्रेजी सीखी थी । इससे अंग्रेजी सरकार का सभी रहस्य दामाजीराव गायकवाड को बताया करती थी । राजबा के कहने से गवर्नर ने आदेश किया कि राजस्थान से आने वाले राजा अब हिंसा यज्ञ करें तो उन्हें बन्दी बना लिया जाय । यह भी आदेश किया कि उनावा गाँव में रणीयात के माताजी का अहिंसक यज्ञ संपन्न होने के बाद

ही रुपालकी पल्ली प्रारंभ करना है, इस तरह का अंग्रेजी सरकार ने आदेश कर दिया । अह आदेश आज भी चालू है।

रणीयातबाने ऐसा ही एक और कार्य किया था । गायकवाड सरकार ने उनावा गाँव में महाराष्ट्र से जमीन दारों को लाकर वसाया था । उन सभी को जमीन भी दिया था । गाँव के गरीब किसान उन जमीनदारों की जमीन लेकर बटाई का काम करते । तीन हिस्से का भाग मिले एक हिस्से को वे लोग रखें इसके लिये मुस्लिम चौकीदारों को रखते थे । खेत में से घास निकालने के लिये नियम था लेकिन पाक की चोरी करने पर उन्हे १ घंटे तक कूएं में उल्टा लटकाया जाता था। रणीयातबाने पीपलज की राजबा के कहने से यह नियम भी बंद करवाया था । उनावा की किसी भी बहु-बेटी को मुस्लिम सैनिक परेशान नहीं करता था । रणीयातबा ने ग्राम सेवा का तीसरा महान कार्य किया था ।

उनावा गाँव में पांच हजार वर्ष पुरानी गंगाजल बावली का पुनरुद्धार कराने के लिये राजबाने अपने पति दामाजी गायकवाड से पूतकर्म प्रारंभ करवाया लेकिन गाँव के लोग बड़े-बड़े पत्थर चुरा लिये वापस नहीं दिये इसलिये वह कार्य वाधित हो गया जैसा का तैसा उसे छोड़ दिये । आज वह रणीयातबावली अथवा डमो (दामाजी) बावली के रुप में जानते हैं ।

रणीयात बा ने ग्राम सेवा का चौथा महान कार्य किया । गाँव में हरिजन भाई नहीं थे उन्हें पेथापुर से बड़े संमान के साथ लाकर अपने गाँव में वसाई थी । गाँव में कुत्ता भी मर जाता तो उसे घर के ही सदस्य रात्रि के समय कहीं फेंक आते थे । रणीयात बा ने राज बा से कहकर दामाजी गायकवाड द्वारा जमीन दिलवाकर किसानी की जमीन दिलवाकर उन सभी के लिये एक कूँआ बनवाकर बड़ा पवित्र कार्य की थी । ग्रामयज्ञ के शुभारंभ में उपयोग आने वाले नारियल में से चौथे बाग को देकर संमान करने की परंपरा चालू की । रणीयात बाने धर्म सेवा का पाँचवा महान कार्य किया । शिवायल में कृष्ण को प्रतिष्ठित करके उनवा गाँव में गायकवाड के चंपकेश्वर महादेव थे उन्हीं के सन्निकट में दामाजी रावगायकवाड के शुभ हाथों से रणीयात बा के मार्गदर्शन से राधाकृष्ण की मूर्ति विसनगर के केशवलाल जहाँ के खर्च से प्रतिष्ठित किये थे । उसी परिसर में ''जय भोले मंडल'' तथा यमुना विहारी मंडल स्थापित करके भजन की स्पर्धा कराकर स्वयं निर्णायक बनकर इनाम सभी को देती और हरि-हर के वाक्य वाले स्वरचित गीत गाती । उन्होंने रामजी मंदिर का सरयु विहारी मंडल तथा उद्धव संप्रदाय का ''ओधा मंडल'' स्थापित किया था । रणीयातबा ने धर्म सेवा का छट्ठा महान कार्य किया । इस पंथ में से अंधश्रद्धा को दूर करने का इस पंथ में ''कामरु देश की मलिन विद्या'' के नाम से बहुत सारे बाबा डोंगी थे वे पैसे पड़ाकर पलायन हो जाते थे । ब्रह्मपुरी के २०० जितने घर धरतीकंप में धराशायी हो गये थे । १००० जितने नागर लोक कमोत मरे थए । वे सभा अधोगति को प्राप्त हो गये है, वे सभी को प्रेत होकर परेशान करते हैं । ऐसी अंधश्रद्धा को दूर करने के लिये दूर के सम्बन्धी लाभ शंकर को गोमतीपुर से बुलाकर उनके पुत्र जीवा रावल को कामरुदेश की विश्व विख्यात दश महाविद्या सीखने के लिये गायकवाड के खर्च से भेंजवाई थी । उनके साथ रक्षण करने के लिये अपने यजमान करसनदास मनोहर बारोट को भेंजवाया । वहाँ पर भैरव के पुजारी पिनेक को गुरु बनाकर विद्या सीखे । प्रभु उस समय उनावाके इन तीनो को पहचान कर कहा कि आप लोग बड़े पवित्र कुल के हैं, इस विबेक राक्षस को छोड़कर अपने घर चले जाओं । मैं आप सभी को मिलने अवश्य आऊँगा । पिबेक के सं. १८५३ कार्तिक पूर्णिमा को पराजित होने के बाद तीनो जन उनावा आकर महाराज की प्रतीक्षा करने लगे । उसी समय जीवा रावल तथा मनोहर बारोट का कमौत अहमदाबाद में हो गई । करसनदास रणीयात बा को अनादि मुक्त जानकर गुरु रामानंद की आज्ञा से सेवा करते थे ।

रणीयातबा ने धर्म सेवा का सातवां सबसे बड़ा सेवा कार्य की । महाराज को उनावा में रहने के लिये कभी वहाँ से नहीं जाने के लिये इस तरह का अमर

वरदान प्राप्त की थी । कुछ समय बाद भयंकर प्लेग का रोग चारो तरफ फैल गया । स्वंय के देवर-जेठ का कुटुम्ब तथा स्वयं का पति एवं पुत्र सभी उस प्लेग रोग में समाप्त हो गये । रामानंद स्वामी को इसका समाचार मिला तो मिलने आये रणीयातबा रोते हुए उनसे कहने लगे कि गुरुजी जो भगवान की भक्ति कहते है उनकी यही दसा होती है ? गुरुजीने कहा कि बेटी तूं भगवान की भक्ति करती थी भगवान को पाने के लिये या माया प्राप्त करने के लिये । बेटीने कहा कि भगवान को प्राप्त करने के लिये । तो जा अब दृढ मन से भगवान की भजन भक्ति करो । भगवान तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जायेगे । हुआ भी ऐसा । सं. १७६२ शिवरात्री को सिद्धपुर में ब्रह्म भोज कराकर महाराज जेतलपुर जा रहे थे । महाराज को बीच में उनावा गाँव की याद आ गई, साथ ही कामरु देश में रावल को दिया हुआ वचन भी याद आ गया । इसलिये जीवारावल का नाम पूछते हुए - उसके घर पहुंच गये । लेकिन घर बंधथा । बगल में रणीयात बा के घर गये जहाँ आज मंदिर है । रणीयातबा मूशर से कुछ कूट रही थी । महाराजने ऊपर से मूशर को पकड़ लिया । और कहा कि अब मैं यहाँ से कही नहीं जाऊँगा ऐसा ही हुआ ।

संवत १९१२ यम द्वितीया को यमुना में स्नान करते हुए १०० वर्ष की उम्र में उनका अक्षरवास हुआ था ।

जिस तरह जेतलपुर में गंगामां उसी तरह उनावा की उनकी बहन रणीयातबा तथा महेसाणा की तीसरी कुलशकुंवरबा थी ।

श्रीहरिने उनावा में अनंत लीलायें की उसमें रणीयात बा की सेवा अद्वितीय थी । श्रीजी महाराज के प्रसादी का वह मूशल आज भी उनावा में उनके वंशज डॉ. अशोकभाई महेता उसकी पूजा करते हैं । निष्कुलानंद स्वामी भक्त चिंतामणी प्रकरण-११९ में लिखते हैं कि -

द्विजरुप रणीयात नाम, ठार हरखो उनावे गाँव ॥
कणबी भक्त रामदासभाई, कुबेरबसन नानी बाई ॥

श्री स्वामिनारायण मासिक के कार्य हेतु नीचे के फोन पर संपर्क करे :
मो. नं. ९०९९०९८९६९, समय प्रातः ८-०० से ५-०० बजे तक
(इस मोबाईल के अलांवा अन्य फोन-मोबाईल पर संपर्क न करें)

फलाहारी आंटा
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर धर्मशाला आफिस में फलाहारी आंटा मिलेगा ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में "अक्षरभुवन" मंदिर का जीर्णोद्धार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में अक्षरभुवन मंदिर में बाल स्वरुप घनश्याम महाराज बिराजमान है . इस अक्षर भुवन मंदिर को बहुत वर्ष होने से जीर्ण हो गया है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से इस समय जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है । ऐसे अलौकिक तीर्थ में जहाँ पर श्रीहरि बाल स्वरुप में दर्शन देते हैं ।

उसमें आप सभी को सेवा करने की ईच्छा हो तो आफिस में नगद, चेक, ड्राफ्ट से सेवा के रुप में जमा करा सकते हैं ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अमदावाद-३८०००१ फोन नं. ०७९-२२१३२१७०

अमदावाद मंदिर में बाहर से आनेवाले हरिभक्तों को सूचना

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में बाहर से आने वाले हरिभक्तों को विशेष सूचना है कि -

जब आप मंदिर में आवें तो पहले से मंदिर की आफिस में रहने की व्यवस्था के लिये तथा खाने की व्यवस्था के लिये कोठारी स्वामी को जानकारी देनी आवश्यक है । आप के साथ आने वाले कुल कितने लोग भोजन करेंगे तथा कितने रुम की व्यवस्था चाहिए । इसके लिये नीचे के फोन नं. पर जानकारी करके आयें । गेस्टरुप के लिये आपका आइडी प्रूभ साथ लाना आवश्यक है ।

फोन नं. : ०७९-२२१३२१७० मो. नं. : भावेशभाई : ६९१३५३७०३५ मोहनभाई ९५५८१६४५४१

चेष्टा के पदों से दिव्य सुख की अनुभूति

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

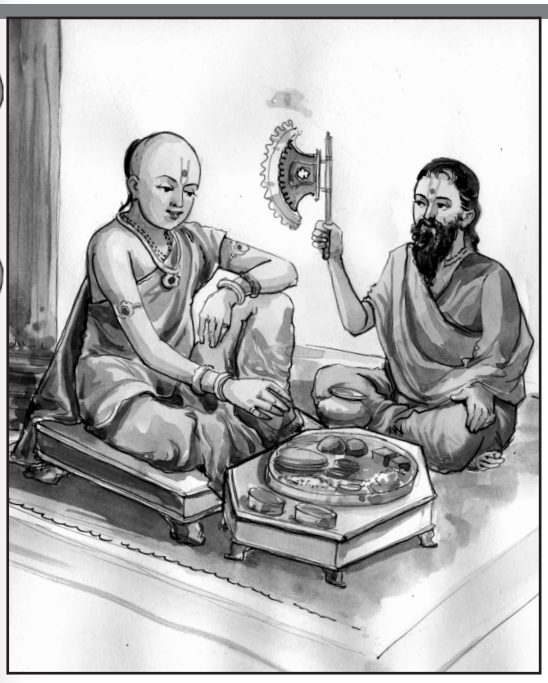

श्रीहरि की स्वाभाविक चेष्टा का दर्शन समकालीन नंद संत करते थे । उस समय उन्हे अनंत सुख की अनुभूति होती थी । उसका वर्णन करना बड़ा कठिन है । जब नंद-संतो को बहुत सुख का अनुभव होता तब स्वत: श्रीहरि के चेष्टा पद स्वत: निकल आते थे । जिसे सुनकर श्रीहरि बहुत प्रसन्न होते थे । जिसका कारण यह कि उन पदों से सन्तों का स्नेह प्रगट होता था । आज भी भक्तों को श्रीहरि के प्रति अगाधप्रेम है जिससे भक्तजन नित्य नियम पूर्वक श्रीहरि की चेष्टा के पद गाकर श्रीहरि को सुलाते हैं । मंदिर में जो नियम भक्तलोग करते हैं वही नियम सायंकाल अपने घरो में भी करते हैं । रात्रि के समय सिंहासन पर विराजमान अपने इष्टदेव को चेष्टा के पद घर के सभी लोग बोल कर शयन कराते हैं । इससे दिव्यानंद की प्रतीति भी होती है ।

कितने भक्त तो नियम पूरा करने के लिये यंत्र वत चेष्टा के पद बोल जाते हैं । इससे न तो उन्हें सुख मिलता है न तो महाराज प्रसन्न होते हैं । इसी लिये महाराजश्री सभा में कईबार कहते भी हैं कि चेष्टा के पद मूर्ति को सुनाकर अर्थातनुसार पूर्वक धीमे-धीमे बोला जाय तो बहुत सुख मिलता है ।

प्रथम के १० पद में प्रेमानंद स्वामीने श्रीहरि की नित्य स्वाभाविक सहजलीला का अद्‌भुत वर्णन किया है । उस समय संत-हरिभक्त श्रीहरि लीला देखकर जितना आनंदित होते के उनता ही सुख आज भी उनपदो के गाने से सुनने से मिलता है । ''ओरा आवो श्याम स्नेही'' पद का गान करने से श्रीहरि के चरणो में सोलह चिन्ह का गान करने से सुनने से दृष्टि के समक्ष दर्शन की अनुभूति होती है ।

निष्कुलानंद स्वामी द्वारा रचित पद ''हवे मारा वालाने..... इस पद का स्वयं गान करने से श्रीहरि का स्वास उच्छवास में सतत नित्य याद करने का अभ्यास करना चाहिए । जिन्हें प्रभु बहुत प्यारे होंगे उन्हीं को भायेगा । जब से हमें ये भगवान मिले हैं तबसे हम पूर्ण पदवी को पा सके हैं । अपने मूल मंदिर में हजारों लोग रोज दर्शन करने आते हैं । जिसने इन अक्षराधिपति पूर्ण पुरुषोत्तम परमात्मा की शरणागति स्वीकार करली - जिसने इन्हे पहचान लिया उनके जन्मजन्मांतर की कमी दूर हो गई, ऐसा मानना चाहिए ।

रे श्याम तमे साचुं नाणुं - इस पद में मुक्तानंद स्वामीने संसार की असारता समझाकर मात्र श्रीहरि को सच्चा धन बताया है । श्रीहरि के अलांवा जो भी सुख-सम्पत्ति कही गयी है वह अन्त में महादु:ख बताई गयी है ।

''वन्दु सहजानंद रसरुप'' इस पद में प्रेमानंद स्वामीने श्रीहरि की महिमा तथा मूर्ति का वर्णन किया है । कैसी महिमा तो लिखते हैं कि जिस का गुणगान ''शेथ सहस्त्र मुख गाय, निगम नेति कहे रे लोल.... । कैसी मूर्ति ? तो लिखते हैं कि ''पहला तारी मूर्ति अति रसरुप, रसिकजोईने जीवे रे लोल, वहाला ए रसना चारणहार, के छाश ते न पीवे रे लोल... अमदावाद मंदिर के रंगमहल में विराजमान श्री घनश्याम महाराज के मंगला का

स्वरुप अथवा अन्यत्र सभी मंदिरो में विराजमान घनश्याम महाराज के मंगला के स्वरुप का जिसने दर्शन किया है उसे गाने का तथा सुनने का सुख प्राप्त होता है, अथवा श्रीहरि का स्वरुप कैसा है, उदर में त्रिबंली है ना भि गरही है इत्यादि का स्मरण-चिन्तन पूर्वक दर्शन करने से सुख मिलता है। कुछ वर्णन ऐसा भी आता है कि जिसका दर्शन मूर्ति द्वारा नहीं कर सकते। जैसे - जोया जेवी चाल छे रे लोल - चतुराई आवता रे लोल, मीठुं-मीठुं गावता रे लोल - वहाला तारे हसवे हराणुं चित, सभा मध्ये बैठा मुनिना वृन्द, तेमां शोभे तारे बींट्य जेम चन्द्र हसीने बोलावता रे लोल - बालव वेणमां रे ..... । इत्यादि वाक्य ऐसे हैं कि - जो लोग जिस तरह धर्म वंशी आचार्यश्री को श्रीहरि का अपर स्वरुप मानते है ऐसे भक्तजन को इन पंक्तिओं के रहस्य का ख्याल आयेगा कि श्रीहरि की चाल कैसी रही होगी । श्रीहरि का हंसना या गाना कैसा रहा होगा ? अमदावाद गादी के प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री, दक्षिण विभाग के हरिभक्तों के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का जिसने दर्शन किया हो, चलते समय जो देखा हो, हंसते देखा हो, भोजन करते समय जो देखा हो, इसी तरह संतो के साथ सभा में विराजमान या किसी के घर पदार्पण करते हों (आज मारे ओरडे रे आव्या अविनासी अलबेल) दर्शन किया हो उसे ही अनुमान होगा कि श्रीहरि की ए सभी क्रिया कैसी रही होगी ?''नेणा करुणा मां भरपूर यह सब मूर्ति में भी देखा जा सकता है, इसी तरह आचार्यश्री में भी देखा जा सकता है । दिखावा वाला काम छोड़कर, आडंबर - दंभ का भाव छोड़कर निर्दोषभाव से दर्शन करने का अद्‌भुत आनंद होता है। ये सभी वाते धर्मवंशी आचार्य की परंपरा में दिखाई देती है। धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री खिल खिला कर हंसने की परंपरा श्रीहरि की प्रत्यक्ष दिखाई देती है । इस उन्मुक्त हास्य से किसी को पीड़ा होती हो तो निश्चित रुप से वह मंदिर में व्यर्थ ही आता है।

आज मारे ओरडे रे ..... पद में प्रेमानंद स्वामीने श्रीहरि के श्रृंगार का वर्णन करके श्रीहरि की सर्वोपरिता तथा श्रीहरि के धाम में जाने की अलौकिकता अन्यत्र कहीं दृष्ट नहीं होती । महाराज स्वयं कहते है कि हमारे धाम मे कौन जा सकता है। हमारे पास कौन रह सकता है यह बड़ी गूढ बात है।

मंदिर में जो श्रीहरि के श्रृंगार का दर्शन करता है, उसे यह पद सुख प्रदान करता है। जीव - ईश्वर तणो रे माया काल प्रधान प्रकृति पुरुष सहुने नश करुं रे। इसके अलांवा अक्षरब्रह्म पर्यंत सभी का स्वामी हम सभी को मिले हैं ऐसे श्री स्वामिनारायण हैं। उन्ही की इच्छा के विना कोई सूखा तृणभी नहीं तोड़ सकता। यह वात जिसे समझ में आ गई तो उसका कल्याण निश्चित समझना । श्रीहरि की आज्ञानुसार मिथ्या पंचविषय की आशा यदि हम छोड़ देंगे तो निश्चित ही कल्याण हो जायेगा। संसार में कुटुंब - परिवार को झूठा समझकर आसक्ति प्रीति को छोडकर महाराज की आज्ञानुसार धर्म-नियम का पालन करेंगे तो आत्म कल्याण होगा, श्रीहरि की मूर्ति में प्रेमकर पायेंगे, भक्ति दृढ हो पायेगी तथा आत्यांतिक मोक्ष को प्राप्त कर सकेंगे, अन्यथा जगत में भटकते रह जायेंगे । संसार-कुटुंब झूठा कैसे है तो हम सभी जानते हैं कि जो कमाता धमाता है या बालक है तो उससे कितना प्रेम करते हैं, इस तरह कोई वृद्ध को प्रेम करता है क्या ? क्योंकि वृद्ध के पास से सारे स्वार्थ निकल गये हैं। वृद्ध अब किनारे खड़ा है ? उससे अब क्या लेना या इसलिये सभी स्वार्थ के हैं। भगवान तथा भगवान के सच्चे संत को छोड़कर कोई सगा नहीं हैं। इसलिये अन्य जितने भी सगे हैं वे स्वार्थी हैं। इसलिये नियम-चेष्टा के पद प्रतिदिन गाकर श्रीहरि को प्रसन्न करना चाहिए, सभी लोग प्रसन्न करें ऐसी सभी को प्रार्थना।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

दीपावली आई और गई । अपने मंदिरो में दीपावली के प्रत्येक उत्सव परंपरा के अनुसार मनाये गये । परंतु इस वर्ष से श्री स्वामिनारायम म्युजियम में धनतेरस के दिन धन का पूजन प्रारंभ किया गया है । प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से सोना-चांदी के सिक्के के स्वरुप में धन अर्थात् लक्ष्मीपूजन शास्त्रो में बताये अनुसार म्युजियम के गोर द्वारा विधिके साथ किया गया । पहलीबार यह पूजन हुआ है तथा सत्संगियों के घर पर यह पूजन होता रहता है । इस लिये संख्या के विषय में थोड़ी असमंजसथी, लेकिन खूब संख्या में हरिभक्त पूजन-दर्शन का लाभ लिये थे । इस के अलांवा जो हरिभक्त उपस्थित नही रह सके वे खेद भी व्यक्ति किये ।

इस प्रसंग पर म्युजियम को एल.आई.डी. द्वारा सुंदर ढंग से प्रकाशित किया गया था । करीब ३००० दीपक की रोशनी से म्युजियम को जगमग किया गया था । करीब ६-३० बजे प.पू. महाराजश्री म्युजियम में पधारे उस समय बैंड बाजावाले श्री स्वामिनारायण धुन से सारे वातावरण को संगीतमय बना दिये थे । इसके बाद आठ नं. के होल में श्री नरनारायणदेव की मूर्ति के समक्ष सोने के तथा चांदी के सिक्कें रखे गये थे जिन का संस्कृत श्लोको को उच्चस्वरुप में गान करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री द्वारा प्रत्येक सिक्के का पूजन किया गया था । इसके बाद पूजन किये हुए सिक्कों को जिन हरिभक्तोने पूर्व में अपना नाम लिखवाया था उन्हें उसी प्रमाण में सिक्का प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों तथा महिला हरिभक्तो को प.पू. बड़ी गादीवालाजी के वरद् हाथों अर्पण किया गया था । इस प्रसंग पर उद्‌बोधन करते हुए कालुपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने बताया कि सत्संग में इस तरह का अद्‌भुत सुख प्रदान करने वाला ऐसा प्रसंग पहले नहीं हैं ।

इन सिक्कों को जो अपने पास रखेगा, अपने धन के साथ रखेगा उनके यहाँ लक्ष्मी की अछत कभी नहीं होगी । इसके बाद प.पू. बड़े महाराजश्री ने अपने संक्षिप्त आशीर्वाद में बताया कि लक्ष्मीजी का दो स्वभाव है, इससे आप सभी परिचित भी हो । परंतु हम सभी लोग श्री नरनारायणदेव का आश्रय रखकर लक्ष्मी के आने-जाने का उत्तरदायित्व रखेंगे तो जीवन में कभी भी दु:खी होने का अवसर नहीं आयेगा । इसके बाद सभी लोग अल्पाहार का प्रसादलेकर हर्ष के साथ आनंद का अनुभव करते हुए एक दूसरे से अलग हुए थे । जो लोग नाम लिखाने में रह गये थे ऐसे हरिभक्त पीछे से श्री स्वामिनारायण म्युजियम से सिक्का प्राप्त किये थे ।

– प्रफुल खरसाणी

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए ।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि नवम्बर-२०१५

१,८२,२००य-	अ.नि. बचीबा स्वा. मंदिर कालुपुर हवेली। कृते प.पू. बड़े महाराजश्री।	रु. ५,५००/-	प.भ. मधुबा तखुबा गोहिल - भरुच।
रु. १०,०००/-	मीनाबहन के. जोषी - बोपल	रु. ५,०००/-	प्रफुलभाई एम. पटेल - यु.एस.ए.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (नवम्बर-२०१५)

ता. ०६-११-१५	ईश्वरभाई गंगारामभाई पटेल - मेमनगर
ता. १०-११-१५	कालीचौदश के निमित्ते हनुमानजी का विशेष पूजन-यजमानश्री श्याम रवजीभाई पटेल, अंकित रवजीभाई पटेल।
ता. १५-११-१५	डॉ. मयूरभाई पटेल - मेमनगर।
ता. २७-११-१५	मनजी लालजी हीराणी (सुखपरवाला) यु.के.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में किये गये सेवा का फल अनेक गुना मिला

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सोजा गाँव में सत्संग की अच्छी प्रतिष्ठा है। यहाँ पर पांच वर्ष पहले गाँव के सत्संगी दरबार डाभी बकुलसिंह वजेसिंह की स्थिति बहुत खराब थी। लेकिन देव तथा धर्मकुल की निष्ठा के कारण बाद में सुखी हो गये। बगल के गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे हुए थे उस समय संतने श्री स्वामिनारायण म्युजियम में सेवा करने के लिये सभी से आग्रह किया। क्योंकि उस समय म्युजियम के निर्माण का कार्य चल रहा था। सभी को यथाशक्ति सेवा करके अलौकिक लाभ लेने की बात की गयी थी। उस समय बकुलसिंह की सेवा करने की बहुत इच्छा थी, परंतु स्थिति अच्छी नहीं थी फिर भी मनही मन उन्होंने ५,०००/- की सेवा करने का संकल्प कर लिया। अपने मित्र के पास से कर्ज मांगा, उसने कहा कि ऐसे कार्य में कैसे मना किया जायेगा। हम अवश्य देंगे। मित्र से ५,०००/- कर्ज लेकर श्री स्वामिनारायण म्युजियम में सेवा की, उसकी रसीद लिये बाद में उनके मन का भार हल्का हुआ। इसके बाद पांच वर्ष में तो महाराज उनके ऊपर इतनी कृपा किये कि अढडक संपत्ति मिली और वे खूब सुखी हो गये। इस श्री स्वामिनारायम म्युजियम में की गई सेवा का फल महाराज अनेक गुना अधिक करके देते हैं।

ता. २८-१०-१५ को सभी अपने भव्य आलीशान बंगले में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा संतो की महापूजा के निमित्त पदार्पण कराकर धर्मकुल का आशीर्वाद प्राप्त करके पूरा परिवार खूब आनंदित हुआ था। श्री स्वामिनारायण म्युजियम के ऐसे अद्‌भुत चमत्कार अभी भी हो रहे है। श्री स्वामिनारायण म्युजियम में सर्वोपरि श्रीहरि स्वयं साक्षात् बिराजमान हैं। सच्चे भाव से की गई सेवा कभी व्यर्थ नहीं होती। (शा.स्वा. छोटे पी.पी. स्वामी, महंतश्री गांधीनगर से.-२)

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

भगवान विश्वंभर है

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

''धीरज धरतूं अरे अधीरा, ईश्वर पूरे अन्नजोने''

मनुष्य को समझ में आवे या न आवे या विलंबसे समझ में आवे फिर भी यह वात सत्य है । परमात्मा का नाम ही विश्वंभर है । सारे जगत का पोषण परमात्मा ही करते हैं । फिर भी मनुष्य का ऐसा स्वभाव है कि कुछ अच्छा हो जाता है । ''मैंने किया'' खराब हो जाय तो सभी कहते हैं कि ''भगवानने ऐसा क्यों किया ?'' सत्यता जब तक न हो तब तक आज का युवा वर्ग तर्क किये विना नहीं रहता । फिर भी यह वात सत्य है कि भगवान ही सबकुछ के कर्ता हर्ता हैं । इनकी मर्जी के विना कुछ भी संभव नहीं है । इस वात को समझने के लिये यह दृष्टांत वांचे ।

दीपावली के अवकाश में प्राय: लोग घूमने जाते हैं । घूमने-फिरने के स्थल मानव से भर जाते हैं । बालक हो या युवा मा वृद्ध हो सभी अपनी रीति से परिवार के साथ या अकेले घूमने अवश्य जाता है । ऐसा नहीं है कि घूमने गृहस्थ ही जाता है, बल्कि संत भी जरा हित के लिये विचरण करते हैं । ऐसे एक महात्मा तीर्थाटन करते हुए सरहद के पास पहुंच गये । घूमते घूमते थक गये थे, इसलिये वहीं पर वृक्ष के नीचे विश्रांति लेने लगे । कुछ समय के बाद वहीं से एक युवक निकला । उसके पहनावा से वह किसी अच्छे घर का लग रहा था । वह युवक भी उसी महात्मा के पास आकर बैठ गया । वातचीत के बीच में संत से बोल गया कि ''भगवान की कृपा से सब कुछ अच्छा चल रहा है'' । क्या हुआ खबर नहीं कि वह युवक एकाएक क्रोधमें आगया, और कहने लगा । आपको भले ऐसा लगता हो कि भगवान की कृपा से सब कुछ अच्छा है, लेकिन मैं ऐसा नहीं मानता हम जैसा चाहते हैं वैसा ही होता है । वे महात्माजी कहने लगे, भाई ? तुम्हे कोई तकलीफ होतो कहो अथवा तुम्हें कोई प्रश्न हो तो कहो ? तब युवक कहने लगा, महात्माजी मैं ईश्वर को सभी का कर्ता-हर्ता विश्वंभर तभी मांनूगा कि मेरे पास नास्ता है और मैं उसे खाने वाला नहीं हूँ यदि भगवान हो तो मुझे मार कर खिलावें तभी भगवान की सच्चाई नहीं तो नहीं । साधु-महात्मा विचार करने लगे कि ऐसे व्यक्ति के लिये क्या किया जाय ? उन्होंने कहा कि भगवान तुम्हारी ईच्छा अवश्य पूरी करेंगे । वह युवक कुछ दूर पर एक वृक्ष के ऊपर अपने नास्ते को लटका कर ऊपर जाकर बैठ गया । एक घन्टे बीत गया । उसे भूख भी लगी थी लेकिन वह क्या करे ? यह बात टेख की हो गई थी । वह विस्तार सरहद वाला था । थोडे समय के बाद सेना की एक टुकडी वहाँ से निकली । उसने वृक्ष में लटकता डब्बा देखा । उत्सुकता से डब्बा खोला तो उसमें नास्ता भरा हुआ था । उस नास्ते को देखकर सभी के मन में खाने की इच्छा तो हुई लेकिन सेनापति ने कहा कि जानकारी के बिना नही खाना चाहिए । कोई षडयंत्र किया हो तो - आस पास देखना चाहिए । महात्माजी दूर से यह सब देख रहे थे । सैनिको ने ऊपर देखा तो एक युवक बैठा हुआ है । सैनिको को निश्चय हो गया कि यह युवक की ही चाल है ।

उसी समय सैनिकों ने युवक को वृक्ष से नीचे उतारा और कहने लगे, इसे तूं खा, वह मनाकरने लगा, मैं नही खाऊँगा । वे खाने को कहते लेकिन वह शर्त के लिये नहीं कह रहा था । अब वे सैनिक अपने असल रुप में आ गये । कहने लगे । तूं इसमें कुछ मिलाया है इसलिये खाने के लिये मनाकर रहा है अब तुम्हें खाना ही पडेगा । ऐसा कहकर उसे २-३ थप्पड मार दिये । इतना ही नहीं जबरदस्ती उसका नास्ता उसी के मुख में भर कर (खिलाकर) चले गये ।

वह युवक उस साधु महात्मा के चरण में आकर गिर पड़ा । आकर कहने लगा कि, महात्माजी ! आप भी सत्य तथा भगवान विश्वंभर भी सत्य । अब भविष्य में ऐसी भूल नहीं करुंगा । आज मुझे वात समझ में आ गयी कि चींटी को फन तथा हाथी को मन पूरा करने वाले तथा अन्य को आहार देने वाले परमात्मा ही हैं । मुझे अपनी भूल समझ में आगई । अब आप अपनी शरण में लेलीजिये ।

महात्माजी उसे मुमुक्षु जानकर भगवान की भक्ति का उपदेश दिया और बताया कि भगवान नहीं विश्वंभर है । इतना ही नहीं खाया हुआ अन्न पचाने का काम भी भगवान ही करते हैं । ऐसा मानकर भगवान की भजन करो ।

यह वात इतनी सत्य है कि अपने समझ में आये या न

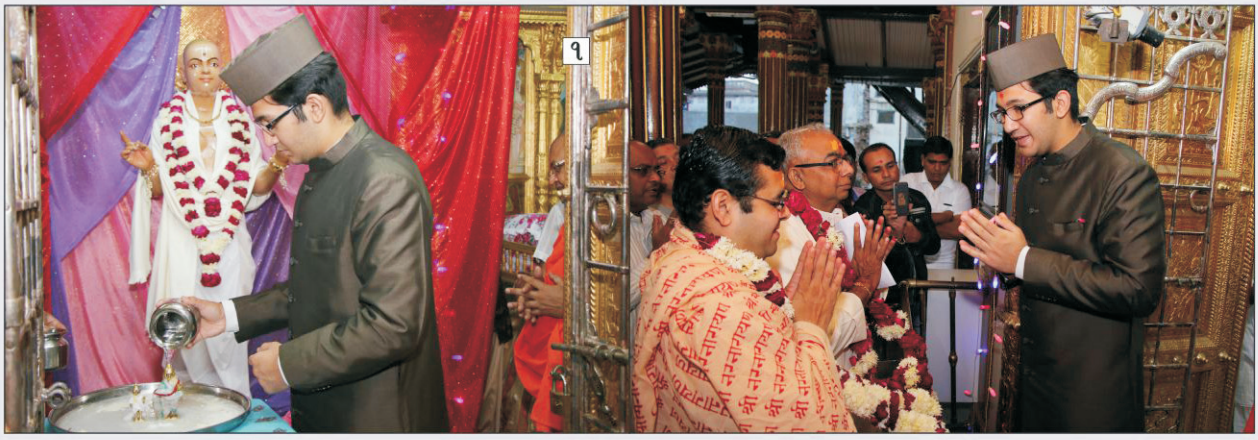

૧.કારતક સુદ બારસના દિવસે અમદાવાદ મંદિરમાં રંગમહોલમાં શ્રી ઘનશ્યામમહારાજનો અભિષેક કરતા પ.પૂ.ભાવિ આચાર્ય ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી તથા યજમાનનું અભિવાદન કરતા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી ૨. અમદાવાદ મંદિરના સભામંડપમાં દિવાળીના દિવસોમાં શાસ્ત્રી સ્વામી નિર્ગુણદાસજીના વક્તા પદે શ્રીમદ્ ભાગવત કથાનું આયોજન કરાયુ હતું તે પ્રસંગે પ.પૂ.લાલજી મહારરાજશ્રીના આશીર્વાદ મેળવતા યજમાન પરિવાર અને પ્રાસંગિક પ્રવચન કરતા મહંત શા. સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા વ્યાસપીઠની આરતી ઉતારતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી, તથા કથાની આરતી ઉતારતા મહિલા હરિભક્તો.

શ્રી નરનારાયણદેવ દેશના વિવિધ મંદિરોમાં અન્નકૂટોત્સવ

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુર

આઈ.એસ.એસ.ઓ. સિનેમીન્સન (ન્યુજર્સી)

ઓસ્ટ્રેલિયા - સિડની

શિકાગો

ટોરેન્ટો

નારાયણઘાટ

કાંકરિયા

પીયોરિયા

ડિટ્રોઈટ

નાથદ્વારા

૧.શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર સિડની-ઓસ્ટ્રેલિયામાં તુલસી વિવાહના દર્શન. ૨. શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર વોશિંગટન ડી.સી. ખાતે તુલસી વિવાહના દર્શન. ૩. આપણા ટોરેન્ટો શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં તુલસી વિવાહના દર્શન. ૪. નારયણઘાટ-અમદાવાદ મંદિરમાં દેવદિવાળીએ તુલસી વિવાહ પ્રસંગે યજમાન પરિવાર. ૫. શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર બિલોદરામાં અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી ૬.પડુસ્મા ગામે પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીના સાંનિધ્યમાં રાત્રી કથા પારાયણ કરતા શા. સ્વામી રામકૃષ્ણદાસજી (કોટેશ્વર)

आये लेकिन हम सभी को स्वामिनारायण ही भोजन कराते हैं । किस तरह ? अपने इष्टदेव ने वरदान दिया है कि मेरे आश्रित के प्रारब्धमें भीख मांगना लिखा हो तो वह मुझे मिले तथा हमारे भक्तों को सुख पूर्वक अन्न वस्त्र मिले । ऐसी कृपा कृपानिधान की है ।

●

कौन पवित्र बने

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

पुराणों में ऐसी उक्ति है कि गंगाजी पाप का नाश करती हैं । जो गंगाजी में स्नान करता है उसके सभी पाप भस्म हो जाते हैं । यह वात सत्य है । यह विचार बड़ी सरलता से आता है । हम सभी को तो आता ही है, एकबार माता पार्वती को भी ऐसा विचार आया था ।

एक बार हरिद्वार में कुंभ का मेला लगा था । लाखों लोग उस कुंभ मेले में आये हुए थे । वे लोग अपने पाप को नष्ट करने के लिये गंगाजी में स्नान कर रहे थे । ऐसे समय में भगवान शिवजी तथा माता पार्वती जी भी वहाँ आये । उन लाखों लोगोंने गंगाजी में स्नान करते देख कर पार्वती जी भोलानाथ से कहने लगी । क्या ये सभी मनुष्य पाप से मुक्त हो जायेंगे ? महादेवजी हंस पडे । महादेवजी को हंसते देखकर पार्वतीजी भगवान शिव को देखने लगी और कहीं कि आप क्यों हंस रहे हैं । क्या जो पुराणोक्ति है वह गलत है । तब भोलानाथजी ने कहा कि ऐसा नहीं है, पुराणी की वात सत्य है ।

लेकिन.....

फिर माता पार्वती जी भगवान की तरफ देखने लगी, ह लेकिन ... क्या ? तब भोलानाथने कहा कि आपको समझाने के लिये रुप बदलना पडेगा । भोलानाथ रास्ते में एक खड्डा था उसमें गिर पडे । इधर पार्वतीजी भी वृद्धा का रुप लेकर खड्डे के पास बैठकर रोने लगी । जोर-जोर चिल्लाते हुए कहने लगीं कि हमारे पतिको कोई बाहर निकालो । कई लोग वृद्धा की करुण रुदन सुनकर वहाँ वृद्ध को निकालने के लिये आते हैं, उसी समय वृद्धा के रुप में देवी कहती है, रुकिये, पहले आप लोग मेरी वात सुनिये ।

इस हमारे पति देव को श्राप है कि जो जीवन में कोई पाप किया होगा । वह मेरे पति का स्पर्श करेगा तो जलकर भस्म हो जायेगा । यह सुनकर सभी वापस चले जाते थे । वे कहते जाते थे कि निश्चित ही कोई न कोई छोटा-बड़ा पाप हुआ होगा । हमें क्या ? भले मर रहा है बुड्ढा को हम बचाने नही जायेगा । इस तरह सैंकडों लोग आये और वापस चले गये । कोई भी सहयोग करने का प्रयत्न नहीं किया ।

कुछ देर बाद एक श्रद्धालु वहाँ से निकला वह भी वृद्धा की आवाज सुनकर वहाँ आया । वह भी खड्डे में से निकालने की तैयारी की । वह माताजी उससे भी वही वात की । वात सुनकर वह भक्त कहने लगा - माताजी अभी मैं तुरंत गंगाजी में स्नान करके आ रहा हूँ । गंगाजी में स्नान करने से हमारे सभी पाप नष्ट हो गये । स्नान के बाद कोई पाप नहीं किया, इसलिये मैं निकाल सकता हूँ । जब वह भक्त खड्डे में से वृद्ध को निकालने के लिये हाथ बढाया तो भोलानाथ अपने मूल स्वरुप में आगये ।

देवी पार्वती से भोलनाथ ने कहा, देवी ? स्नान तो लाखों लोगों ने किया लेकिन शास्त्र वचन में विश्वास, श्रद्धा किसी को नहीं थी । सभी स्नान करते है, हम लोग भी स्नान करते हैं, सभी लोग स्नान किये लेकिन जिसके हृदय में श्रद्धा न हो तो वे भले रोज डुबकी लगाता हो लेकिन उनके पापों का नाश नहीं होता । लेकिन जो व्यक्ति श्रद्धापूर्वक स्नान करते हैं उनके पापों का नाश गंगाजी कर देती हैं । भोलानाथजी तथा पार्वतीजी उस मुमुक्षु को आशीर्वाद देकर अदृश्य हो गई ।

मित्रो ! इस वात का हमें भी ध्यान रखना चाहिए कि हम जो भी भजन-भक्ति, सेवा-सत्संग करते हैं वह सच्ची श्रद्धा के साथ मन से करना चाहिए । तभी निष्पाप होंगे । ऐसी वात वचनामृत में आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजने स्वामिनारायण भगवान से पूछा कि हे प्रभु ! पूरे दिन में जो भी ज्ञात-अज्ञात पाप हुआ हो वह घड़ी या आधी घड़ी भगवान की भजन करने वाले का पाप नष्ट होता है या नहीं ?

यह सुनकर स्वामिनारायण भगवानने कहा कि - मन-कर्म वचन से इन्द्रिय तथा अंतकरण सहित अर्थात् एकाग्रता के साथ श्रद्धापूर्वक एक घड़ी-आधी घड़ी जो भगवान का भजन करता है उसका सम्पूर्ण दिन में किया गया पाप नष्ट हो जाता है । इसलिये अन्तर में सच्ची श्रद्धा रखकर भगवान की भजन करनी चाहिए ।

श्री स्वामिनारायण

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
"आसक्ति मात्र परमात्मा में रखनी चाहिए"
(एकादशी की सत्संग सभा में कालुपुर मंदिर हवेली)

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

अपनी यह सत्संग सभा होती है वह किस लिये होती है, वह किस लिये होती है ? शास्त्रो के माध्यम से हम सभी का ज्ञान बढे इसलिये। परंतु भक्ति के विना ज्ञान अधूरा है। चाहे जितना बड़ा ज्ञानी व्यक्ति हो ज्ञान के विना उसकी भक्ति अपूर्ण कही जायेगी। वह इसलिये कि जब ज्ञान बढता है तो अहंकार आ जाता है। परंतु ज्ञान के साथ भक्ति हो तो जीवन में नम्रता आती है। जीवन में भक्ति के साथ धर्म हो तो ज्ञान पूर्ण कहलाता है। उद्धवजी खूब तत्व ज्ञानी थे। लेकिन गोपिंया अनपढ थी। उनमें प्रेम लक्षणा भक्ति थी। दोनो का खूब महत्व है। परंतु उद्धवजी के अनुसार ज्ञान सर्व श्रेष्ठ है। ज्ञान में सबकुछ आ गया ऐसा वे मानते थे। श्रीकृष्ण भगवानने उद्धवजी को व्रज में भक्ति की पहचान करने के लिये भेंजा था। अन्यथा परमात्मा को किसी की जरुरत नहीं। संकल्प मात्र से सभी कार्य पूर्ण हो जाय। श्रीकृष्ण भगवानने उद्धवजी से कहा कि आप गोपियों को उपदेश कीए कि वे सब हमें भूल जांय तभी हम उन्हें भूल सकते हैं। जब भक्त सच्चे मन से भगवान की भक्ति करता है तो भगवान भी उसे भूलते नहीं है। श्री कृष्ण परमात्माने कहा कि गोपियों की विरह व्यथा को दूर कीजियेगा। मेरे माता पिताजी को सान्तवना दीजियेगा। उद्धवजी जब नन्द-यशोदाजी को मिले तब उनका आधा अहंकार दूर हो गया। जब माता पिता ने कहा कि हमें कदंबके वृक्ष पर - यमुना के किनारे प्रत्येक जगह पर कृष्ण अनुभव होता है। यह सुनकर उद्धव का जो ज्ञान भक्ति के विना का वह नरम पड गया। गोपियां जब उद्धवजी से कहीं की श्रीकृष्ण तो हमारे साथ ही रहते हैं। अब आप बताई किस कृष्ण का संदेश लेकर आये हैं। इस प्रकार अनपढ गोपियों की वात सुनकर उद्धव आश्चर्य चकित होकर भक्ति के रस में डूबने उतराने लगे। वहीं पर कई महीने रुके रह गये। इतना ही नहीं वे गोपियों के शिष्य बनकर वहाँ से वापस गये। इससे यह समझना है कि चाहे जितना भी ज्ञान हो लेकिन भक्ति साथ में होनी चाहिए। हृदय से भक्ति करनी है। जिस तरह अग्नि लकड़ी को भस्म कर देती है, उसी तरह प्रेम लक्षणा भक्ति सभी पाप को नष्ट कर देती है। हृदय भर जाय, रगडे झगडे हो जांय, आंखो से आंसु बहने लगे तब समझना चाहिए कि हम भक्ति की सीमा में प्रवेश किये हैं। तभी भगवान वश में होंगे। ऐसी भक्ति जब होगी तभी भगवान का अतिशय प्रेम होगा। आसक्ति मात्र परमात्मा में रखनी चाहिए, इससे सब कुछ की प्राप्ति होगी।

एक राज्य के राजाने ऐसा प्रचार करवाया कि कल प्रातः काल जब राज्य का दरवाजा खुले तब सभी लोग अंदर आ जाना और जिस वस्तु पर जो हाथ रखेगा वह वस्तु उसकी हो जायेगी। यह सुनकर सभी प्रजाजन दरवाजा के बाहर आकर एकत्रित हो गयी। सभी विचार करने लगे कि हम कौन सी वस्तु पसन्द करते हैं। सभी अपने मन की वस्तु का विचार करने लगे। कोई विचार करने लगा कि मैं राजकुमारी के ऊपर हाथ रखूंगा, कोई अन्य वस्तु पर हाथ रखूंगा जो सबसे उत्तम होगी ऐसा विचार करने लगा। इसके बाद दूसरे दिन प्रातः दरवाजा खुला सभी अन्दर आ गये और अपने मनकी प्रसंदवाली वस्तु पर हाथ रखने लगे। इतने में एक छोटा बालक आया वह राजा के ऊपर हाथ रखदिया। इसका परिणाम क्या आया, जितनी वस्तुयें थी सभी उस बालक की हो गई। क्योंकि राजा स्वयं बालक के हो गये, इसलिये कि राज्य राजा का था।

हम क्या करते है। यह जगत महाराज का बनाया हुआ है, हम महाराज के पीछे नहीं दौड़ते, लेकिन उनके द्वारा बनाई गई वस्तु के पीछे दौड़ते हैं। इसलिये जगत के पीछे दौडना बन्द करके परमात्मा के पीछे दौड़ेगे तो उनके द्वारा बनाई गयी वस्तु अपने आप मिल जायेगी। बड़ी सरलता से मिल जायेगी। जगत की वस्तु के लिये इतनी भाग दौड़ करने की जरुरत नहीं हैं।

सत्संग करने से ज्ञान तथा भक्ति दोनो ही मिलाती है। इससे उत्तम उपाय जगत में और भी नहीं हैं। सत्संग करने से सरलता से भगवान की प्राप्ति होती है। आप लोग दूसरे को

सत्संग समझाते हैं। दूसरे को सत्संग में लेजाते हैं, यह सब से बड़ी बात है। हम दूसरे को सत्संग करा सकते हैं इससे बड़ी बात और कुछ भी नहीं है। इससे भगवान प्रसन्न होते हैं।

●

जगत का सबसे बड़ा तीर्थ कौन ?

– सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

जगत के सबसे बडे तीर्थ मा-बाप है। यह तीर्थ अपने घर में ही रहते हैं। इस तीर्थ की यात्रा जिसने की हो वह जगत के सभी तीर्थयात्रा की है । इसीलिये कार्तिकेय स्वामी तथा गणपतिजी दोनो पुत्रो से माता-पिता शिव-पार्वतीने कहा कि आप दोनों मे से सबसे पहले जो पूरी पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके आ जायेगा उसका सर्व प्रथम विवाह कर दिया जायेगा। मा-बाप की वात सुनकर कार्तिकेय पूरी पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने निकल पड़ते है। जब कि बुद्धिशाली छोटे पुत्र गणेशजी अपने माता-पिता की प्रदक्षिणा करने लगे । शिवजी तथा पार्वतीजी हंसने लगी और कहने लगी कि बेटा गणेश ? तुं तो हमारी प्रदक्षिणा किया, जिस में सभी तीर्थ समाये हुए हैं। गणेशजीने कहा कि हे माता पिताजी ? सभी तीर्थ में आ गये ? इसीलिये मैंने आप दोनो की प्रदक्षिणा की है। यह सुनकर शिव-पार्वतीजी खूब प्रसन्न हो गये तथा शर्त के अनुसार गणेशजी का प्रथम विवाह करवाया गया।

माता-पिता की सेवा सभूषा - आराधन के विना रोते-विलखते - दुखिया मां बाप को छोडकर जो बालक तीर्थ करने जाते हैं, देव दर्शन करने जाते हैं, तो पद्मपुराण के अनुसार उसे तीर्थ का फल नहीं मिलता। लेकिन वह पृथ्वी पर भटकने का अवश्य कार्य करता है। इस विषय में में पद्मपुराण में एक कथनी आती है - नरोत्तम नाम का एक ब्राह्मण था। वह इसी तरह मा-बाप का अनादर करके तीर्थ करने चला गया। उस ब्राह्मण के पास ऐसी तप की शक्ति तीर्थ में स्नान करके प्रतिदिन अपने गीले कपड़े को आकाश में सुखाता था। अपनी इस सिद्धि पर उसे अहंकार आ गया। मेरे जैसा इस जगत में पुण्य करने वाला कोई नहीं है। ज्यौं ऐसा वह ब्राह्मण बोला त्यौं आकाश से चारी पक्षी ने उसके मुख में विस्टा कर दिया। क्रोधमें आकर उसने श्राप दिया ''भस्म हो जाओ'' तुरंत वह पक्षी भस्म होकर नीचे गिर गया। इस श्राप के कारण उस ब्राह्मण का पुण्य नष्ट हुआ और गीला कपड़ा जो आकाश में सूखता था वह अब असंभव हो गया । यह देखकर उस ब्राह्मण के मन में भय उपस्थित हो गया । उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे ब्राह्मण ? तूं मूक नामक एक चांडाल के पास जा, उससे धर्म की जानकारी करोगे तो सुखी होगे।

आकाशवाणी सुनकर वह ब्राह्मण चाण्डाल के घर गया। उस समय वह चाण्डाल अपने माता-पिता की सेवा कर रहा था। उसने देखा कि वह चांण्ठा अपने माता-पिता को ठन्ढी में गरम पानी करके स्नान करा रहा है। इसी तरह तेल मालिश रजाई, गरम वस्त्र से सेवा करता था । वसंत ऋतु में दूध, मिष्ठान, सुगंधित पुष्प तथा अन्य वस्तु लाकर देता था। गर्मी में अपने मा-बाप को पंखे चलाता था। सदा अपने मा-बाप को भोजन करा कर भोजन करता था। मा-बाप के पग दबा कर फिर सोने जाता था। इस तरह नाना प्रकार से मा-बाप की सेवा करता था। उसकी सेवासे प्रसन्न होकर भगवान विष्णु उसके घर में ही रहते थे। यह देखकर उस ब्राह्मण को नया लगा। ब्राह्मण चांडाल से पूछा कि मोक्ष के लिये हमें क्या करना चाहिए। मूक चांडाल ने कहा, देखिये भूदेव ? मैं इस समय मा-बाप की सेवा कर रहा हूँ आपके प्रस्न का उत्तर बाद में दूंगा। आपका सत्कार भी बाद में करुँगा। ब्राह्मण क्रोधमें कहने लगा, ब्राह्मण को छोड़कर और कोई कार्य हो सकता है ? भूदेव ? आप व्यर्थ की क्रोधक्यों कर रहे हैं ? मैं कोई पक्षी नहीं हूं कि आपके श्राप से भस्म हो जाऊँगा।

आपका क्रोधपक्षी के ऊपर सफल हुआ होगा लेकिन मेरे उपर नहीं होगा। आपका वस्त्र भी अब आकाश में नहीं सूखता तथा आकाश वाणी सुनकर मेरे घर आये हो। आप लोग कुछ समय खडे रहिये, मा-बाप की सेवा पूर्ण करके आपका हित करुँगा। एक सामान्य चांडाल को ये सभी वातें कौन कह दिया। ब्राह्मण को आश्चर्य हुआ। मूक चांडाल ने कहा यदि आपके पास समय हो तो एक पतिव्रता स्त्री के पास जाइये वह आपको हितकारी वात कहेगी।

नरोत्तम ब्राह्मण घूमते-घूमते पतिव्रता स्त्री के पास गया। वह भी अपने पति की सेवा में लीन थी। वहाँ से तुलाधार नामक व्यापारी के पास गया। तुलाधार स्नान नही करता था, देव तर्पण नहीं करता था, गंदी-मैली शरीर, गंदा कपड़ा पहनाया। फिर भी तुलाधार मेरे हृदय की वात जानता है। हेतु लाधार ? हमें हितकारी धर्म मय वाणी सुनाइये। तुलाधार ने मधुर वाणी में बोले ''इस समय दुकान में बहुत भीड़ है थोडे समय के बाद मिलियेगा। वह ब्राह्मण तुलाधार के पास से एक वैष्णव भक्त के घर गया। इन सभी के घर भगवान प्रत्यक्ष बिराजते थे। यह देखकर उस ब्राह्मण को बड़ा नया लगा। वह भगवान के चरण में अपना मस्तक झुका दिया। हे भगवान मैं आपकी शरण में हूँ, मैं आपका दास हूँ, आप कृपा करके इन सभी के घरो में दर्शन दिये हैं। भगवान विष्णुने कहा

कि हे ब्राह्मण ? ऐसे पुण्यशाली, भक्तों के दर्शन से ही आपके सभी पाप नष्ट हो गये हैं। ऐसे पुण्य शाली भक्तों के एक वार भी दर्शन, स्पर्श या इनके साथ वात करने का अवसर मिले तो अक्षय सुख की प्राप्ति होती है। ब्राह्मणने कहा हे प्रभु ? जिस तरह आप अन्तर्यामी है, इसी तरह आपके भक्त भी अन्तर्यामी हैं। मेरे साप से मरे पक्षी की वात ये सभी भक्त जानते हैं। मैं भी इन के जैसा भक्त बनूं ऐसी कृपा कीजिये।

भगवानने कहा कि हे ब्राह्मण आपके माता-पिता आप से सन्मानित नहीं है। अब आप जाकर उनकी सेवा करो इससे आपको मेरे धाम की प्राप्ति होगी। लेकिन मा-बाप की उपेक्षा से उन्हें नि:सहाय रखने से, उनकी सेवा न करने से तप घटेगा। इसलिये आप अपने मा-बाप की सेवा करो। जिन पुत्रों पर मा-बाप का क्रोधउतरता है ऐसे पुत्रों को ब्रह्मा-शिव भी नहीं वचा सकते। इसलिये आप अपने मा-बाप के पास जाओ उन्हीं की सेवा करो, पूजा करो, उन्हीं की कृपा से आप मेरे धाम को प्राप्त करोंगे। भगवान की आज्ञा को माथे लगाकर तीर्थयात्रा वन्द करके घर गया वहाँ पर मा-बाप की सेवा करने लगा। शिक्षापत्री में श्रीजी महाराजने आज्ञा की है कि ''अपने माता-पिता गुरु की जीवन पर्यंत सेवा करनी चाहिए। मा-बाप की सेवा करने में व्रत-तप-तीर्थ इत्यादि रह जाये तो भी शास्त्र प्रमाणानुसार उसका कल्याण बाधित नहीं होता।

●

अखंड ध्यान

- पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, ता. कडी)

भगवान को निरन्तर देखना, चिन्तन करना ही ध्यान है। भगवान की महिमा को जानना ज्ञान है। जिस तरह गोचारक को सम्पूर्ण दिन धूमना कठिन नहीं है, लेकिन सायंकाल तक घर में बैठ रहना कठिन है। इसी तरह ध्यान करना भी कठिन है। मुक्तानंद स्वामी कीर्तन में लिखे हैं।

''ज्यां जुए त्यां रामजी बीजुं कोई न भासे रे।
भात देखी भूले नहीं अनुभव उजारो रे॥

माणावदर में मयाराम भट्ट की माता को महाराज का निश्चय हो गाय। नित्य वे भजन करती रहती। महाराज का दर्शन काफी समय हो गया। इसलिये मन में संकल्प हुआ कि महाराज का दर्शन कब होगा ? ऐसा विचार करके उदास हो गयी। खाना पीना अच्छा नहीं लगता था। रात्रि में एकबार रोने लगी। एक रात्रि में वे महाराज का ध्यान करने बैठी, दो घडी तक ध्यान करने के बाद जब आंख खोली तो घर में चारो तरफ प्रकाश ही प्रकाश है। वह ज्योत शीतल एवं श्वेत था। उसी में महाराज की मूर्ति दिखाई दी। स्तुति करने लगी। हे महाराज ! आप अपनी दासी जानकर यहीं पर रहिए। वह प्रकाश मयाराम भट्टने भी देखा, महाराज का उन्हें भी दर्शन हो गया। महाराजने कहा कि आपकी विन्ती पर मैने आपको दर्शन दिया है। ऐसा कहकर वे अन्तर्ध्यान हो गये।

वन विचरण के समय एक गाँव आया। वहीं पर नदी के किनारे आसन करके बैठ गये। गाँव की भावसार भगवानदासजी की माताजीने बेटे से कहा कि तूं भगवान को घर लेआओ। उसने पूछा कि भगवान को हम कैसे पहचानेंगे। भगवान के मुख विम्ब पर तेज होगा, भगवान के पैर में १६ चिन्ह होंगे। बालक ने कही कि आपकी श्रद्धा होगी तो भगवान को अवश्य ले आयेंगे। वह नदी के पास आया। भगवान उन सभी के सच्चे प्रेम को देखकर नाम के साथ बुलाये। फिर भी उसने कहा कि मैं भगावन को खोजने निकला हूँ, हमें जल्दी है। भगवानने कहा कि जल्दी भूले हैं - मेरे पैर में कांटा फंसा है, उसे निकालकर जाओ। भगवानदास वहाँ आया और भगवान के पैर से कांटा निकालने लगा। उस समय भगवान के पैर में १६ चिन्ह देखकर उसे विश्वास हो गया कि साक्षात् यही भगवान है। कांटा नही मिला लेकिन भगवान की पहचान उस चिन्ह से हो गयी। आप ही भगवान है ऐसा कहकर महाराज को अपने घर ले आये। माताने कहा क्यों वापस आ गये। मैं भगवानको साथ में लाया हूँ। उस का माता बाहर आकार देखी तो महाराज के मुख बिंब पर तेज (प्रकाश) दिखाई दे रहा था। सभी को निश्चय हो गया कि स्वंय महाराज हैं। सभी स्तुति करने लगे। सभी को महाराजने चतुर्भुज के रुप में दर्शन दिये। गाँव के सभी लोग आकर दर्शन कर गये। तीन दिन तक वहीं रहे। चलने की वात किये। सभी लोग मना कर दिये, तब महाराजने कहा कि, हमे तीर्थ करने जाना है। इसलिय हम रुकेंगे नहीं। जब तक देह रहेगी तब तक हमारा ध्यान करते रहना।

गढडा मध्य-६२ में अयोध्याप्रसादजी महाराजने प्रश्न पूछा इस संसार में मनुष्य से ज्ञात-अज्ञात में पाप हो जाता है। वह पाप आपकी भजन करने से नष्ट हो जायेगा। महाराजने कहा कि - भगवान की भजन करने जब बैठे तब एकाग्र मन होना आवश्यक है।

एकाग्रमन से भजन-भक्ति करने से १ घडी या आधी घड़ी भी वह भजन करता है तो निश्चित ही भगवान में ध्यान स्थिर होगा और भजन के बल से पाप भी नष्ट हो जायेगा।

॥ શ્રી સ્વામિનારાયણો વિજયતેતરામ્ ॥

ઉત્તરાયણ પુણ્ય પર્વ પ્રસંગે દાન પુણ્ય

ભારત વર્ષના પુણ્ય પર્વોમાં ઉત્તરાયણનો મહિમા અનેરો અને અલૌકિક છે.

મકર રાશીમાં સૂર્ય પ્રવેશનો સંક્રાંતિકાળ એ શુભનું મંગળકારી આગમન, સર્વથા દાન પુણ્યમાં અનેક ઘણો ઉમેરો કરતો હોવાથી આ સમયે પુણ્ય સ્થાનકમાં દાન કરવાથી આલોક અને પરલોક સંબંધી સર્વ મનોરથો તત્કાલ ફળે છે.

તો આવા સર્વોપરી શ્રી નરનારાયણદેવના અલૌકિક સાનિધ્યમાં તથા પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી તથા પરમ પૂજ્ય મોટા મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ. ભાવિ આચાર્ય લાલજી મહારાજશ્રીની શુભ નિશ્રામાં અને પૂજ્ય બ્રહ્મનિષ્ઠ સંતોની શુભ ઉપસ્થિતિમાં તા. 16-12-2015 થી તા. 14-1-2016 દરમ્યાન ધૂનનો મહા અલૌકિક લાભ લીધો તે નિમિત્તે તા. 14-1-2016ના રોજ પુણ્ય પર્વ હોવાથી દરરોજ પ્રભાતે થતી ધનુર્માસની ધૂન્ય કથાની દિવ્ય સભામાં પધારી ઠાકોરજીની આ સેવાનો અતિ શુભ પ્રસંગે ઉમંગભેર વધાવી સેવામાં સહભાગી થઈ ધન્યભાગી બનીએ.

સમસ્ત શ્રીનરનારાયણદેવ દેશના હરિ મંદિરના કોઠારીશ્રી અને શ્રી નરનારાયણદેવ યુવક મંડળ જોગ

શ્રી નરનારાયણદેવ દેશના દરેક ગામોના કોઠારીશ્રી અને શ્રીનરનારાયણદેવ યુવક મંડળના પ્રતિનિધિઓને ખાસ ભલામણ છે કે આપના ગામમાં ઉત્તરાયણ પર્વની ઝોળી ફેરવીને તે નિમિત્તે અનાજ-રોકડ જે કાંઈ દાન આવે તે તમામ વસ્તુ ઉઘરાવીને અમદાવાદ કાલુપુર મંદિરમાં જમા કરાવી જશો. આવું સેવાનું સુંદર કામ કરીને શ્રીહરિનો રાજીપો મેળવવા કૃપા પાત્ર બનશો.

મહંત સ્વામી
શાસ્ત્રી સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસના
શ્રીહરિ સ્મૃતિ સહિત
જયશ્રી સ્વામિનારાયણ.

ઉત્તરાયણ પુણ્ય (ઝોળી) પર્વ

નામ : .....

સરનામું : .....

ફોન નં. : ..... મો. : .....

ઉત્તરાયણ પુણ્ય પર્વ

સર્વોપરી ઈષ્ટદેવ શ્રી ઘનશ્યામ મહારાજ, પરમ કૃપાળુ શ્રીનરનારાયણદેવના થાળ તથા ધર્મકુળની રસોઈ તથા સંત, વર્ણી, પાર્ષદો અને હરિભક્તોની રસોઈ નિમિત્તે ગુરુવારના તા. 14-1-2016ના રોજ દર્શને આવો

વિગત	ભાવ રૂા.	વજન	૫ કિલોના ભાવ રૂા.	આપની સેવા રૂા.
ચોખા	૩૫૦૦	૧૦૦ કિલો	૧૭૫	
ઘઉં	૧૫૦૦	૧૦૦ કિલો	૭૫	
મગ	૭૫૦૦	૧૦૦ કિલો	૩૭૫	
તલ	૩૦૦૦	૨૦ કિલો	૭૫૦	
ચણા દાળ	૬૨૦૦	૧૦૦ કિલો	૩૧૦	
તુવેર દાળ	૧૪૦૦૦	૧૦૦ કિલો	૭૦૦	
મોગર દાળ	૯૦૦૦	૧૦૦ કિલો	૪૫૦	
શુદ્ધ ઘી	૪૫૦૦	૧ ડબો	૧૫૦૦	
તેલ	૧૧૦૦	૧ ડબો	૩૩૪	
ગોળ	૩૮૦૦	૧૦૦ કિલો	૧૯૦	
ખાંડ	૩૨૦૦	૧૦૦ કિલો	૧૬૦	
કુલ રૂા.	૫૭૩૦૦		૫૦૧૯	
મંદિર જીર્ણોધ્ધાર				

દાન, વસ્તુ રૂપે, રોકડ સ્વરૂપે તથા ચેક અથવા ડ્રાફ્ટ
"શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુર અમદાવાદ"ના નામે આપશો.
સ્થળ : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર, અમદાવાદ ફોન : ૨૨૧૩૨૧૭૦.

श्री स्वामिनारायण

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में दीपावली के उत्सव भव्यता से मनाये गये

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में तथा पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन में दीपावली के अधोर्निदिष्ट उत्सव भव्यता से मनाये गये।

काली चौदश : श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में धर्मकुल के कुलदेवता श्री कष्टभंजन देव का सायंकाल ६-३० बजे पूजन-आरती अन्नकूटोत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न हुआ था। पुजारी पार्षद बाबू भगत तथा महादेव भगत ने सुंदर आयोजन किया था।

दीपोत्सवी समूह शारदा पूजन : प्रसादी के अलौकिक सभामंडप में सायंकाल ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से समूह शारदापूजन मंदिर के गोर कमलेशभाई तथा अन्य साथी विद्वानो द्वारा शास्त्रोक्त विधिसे करवाया गया था। व्यापारियोंने अपने खाता वही की पूजा करवाकर श्रीहरिद्वारा लिखी गयी शिक्षापत्री श्लोक १४६ का सतत अनुसंधान करते हुये व्यापार करने की प्रार्थना की थी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी व्यापारियो को हृदयपूर्वक आशीर्वाद दिया था।

नूतन वर्ष अन्नकूटोत्सव : नूतन वर्ष के दिन परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती, श्रृंगार आरती तथा छप्पन्न भोग आरती धर्मकुल के वरद् हाथों से संपन्न हुई थई। दर्शनार्थी हरिभक्त देवदर्शन तथा धर्मकुल एवं संत दर्शन करके नूतन वर्ष का आशीर्वाद प्राप्त किये थे।

इन प्रसंगो में पू. महंत स्वामी का मंडल - स्वा. हरिचरणदासजी ब्र. स्वा.राजेश्वरानंदजी, को.जे.के. स्वामी, नटु स्वामी, योगी स्वामी भक्ति स्वामी तथा शा. नारायणमुनि स्वामी इत्यादि संत-पार्षद मंडल एवं हरिभक्तोने सेवा की थी। अन्नकूट प्रसाद वितरण में संतो की सेवा प्रेरणाभूत थी।(को. शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में श्रीमद् भागवत सप्ताह ज्ञानयज्ञ

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से अ.नि. शांतिलाल रवजीभाई चोकसी तथा अ.नि. चंपाबहन शांतिलाल चोकसी के पुण्य स्मरणार्थ उन्हीं के परिवार की तरफ से कार्तिक शुक्ल पक्ष-५ ता. १६-११-१५ से कार्तिक शुक्ल-११ प्रबोधिनी एकादशी ता. २२-११-१५ तक संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पू. शा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् भागवत सप्ताहपाठ के वक्ता शा.स्वा. हरिप्रियदासजी थे। सात दिन तक यजमान परिवार तथा श्रोताजनो को श्रीमद् भागवत कथा का रसपान कराये थे। अन्तिम दिन पूर्णाहुति को व्यासपीठ की आरती प.पू. लालजी महाराजश्री ने की थी तथा यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। समग्र प्रसंग में पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन में उन्हीं के शिष्य मंडल ने सुन्दर आयोजन किया था। सभा संचालन शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी ने किया था। (शा. स्वा. नारायणमुनिदास)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा महंत पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में विराजमान श्री घनश्याम महाराज का २० वाँ वार्षिक पाटोत्सव एवं जीर्णोद्धार के प्संग पर श्री घनश्याम महोत्सव ता. २४-२-१६ से ता. २८-२-१६ तक २० गाँवो में सत्संग सभा का आयोजन

पांचवी सत्संग सभा

ता. ४-१०-१५ को बिलोदरा गाँव में पांचवी सत्संग सभा सुंदर ढंग से संपन्न हुई थी। जिस में संतोने कथा करके तथा कीर्तन भक्ति का लाभ दिया था।(दिव्यप्रकाशदासजी)

छठी सत्संग सभा

ता. १८-१०-१५ को मणीपुर (कडी) गाँव में छठी सभा धूमधाम से की गई थी। जिस में गाँव के तथा अगल-बगल के गाँव के २०० जितने भक्त कथा-कीर्तन-भजन में जुडे थे। संतो में साधु चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) तथा कुंजविहारीदासजी कथा कीर्तन का सुंदर लाभ दिया था। (कोठारीश्री)

सातमी सत्संग सभा

ता. १८-१०-१५ को कला भगत के कूंडाल (कडी) गाँव में सातवीं सत्संग सभा हुई थी। जिस में बड़ी संख्या में हरिभक्त कथा-कीर्तन का लाभ लिये थे। जिस में अहमदाबाद से स.गु.शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारणघाट), महंत पी.पी. स्वामी (गांधीनगर), शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) स.गु. शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी इत्यादि संत कथा का लाभ दिये ते। सभी हरिभक्त प्रसन्न हो गये।(कोठारीश्री)

आठमी सत्संग सभा

खेरोल (तलोद) गाँव में ता. २९-१०-१५ को आठवी

सत्संग सभा में कथा-कीर्तन-भजन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा कुंजविहारी स्वामी ने की थी। जिस में खेरोल, वक्तापुर, माधवगढ के हरिभक्त श्री घनश्याम महोत्सव में मंत्रलेखन तथा जनमंगल नामावली पाठ का नियम लिये थे। हरिभक्त सन्तो से कथावार्ता का सुंदर लाभ लिये थे। (कोठारीश्री खेरोल)

नवमी सत्संग सभा

माधवगढ (तलोद) में नवमी सत्संग सभा ता. ६-११-१५ को आयोजित थी। संतो में शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) शा.कुंजविहारीदासजी ने ५०० जितने हरिभक्तों को जनमंगल नामावली पाठ १०१, तता ५०० जनमंगल नामावली के साथ संतोने श्री नरनारायणदेव की महिमा तथा संप्रदाय की सुंदर वात की थी। गाँव के तथा अगलबगल के गाँव के हरिभक्त लाभ लेकर धन्य हो गये थे। (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (सेक्टर-२) शरदोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा संतो की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर सेक्टर-२ में ता. २५-१०-१५ भव्य शरदोत्सव संपन्न हुआ। इस प्रसंग पर यजमान प.भ. विष्णुभाई गोविंदभाई चौधरीने सुंदर लाभ दिया था। इस प्रसंग पर कालुपुर, नारणघाट इत्यादि मंदिरो से २५ जितने संत पधारे थे। बहनों को आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवाला पधारी थी। शरदोत्सव में रास की व्यवस्था की गई थी। हजारों भक्त दूधचिउड़ा का प्रसाद ग्रहण किये थे। भक्तों की अनुकूलता के लिये नूतन श्री घनश्याम लीफ्ट की पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, पू. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा पू. महंत पी.पी. स्वामी के वरद् हाथों से खुल्ला किया गया था।(शा.चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (सेक्टर-२) आयोजित श्री स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से.-२) के संत भक्तों द्वारा ता. १८-१०-१५ को सुंदर महापूजा संपन्न हुई थी। स्थानिक भक्तों में छोटी से छोटी सेवा करने वाले भक्तों को महापूजा का लाभ तथा श्री नरनारायणदेव के अभिषेक का लाभ मिले इस हेतु से स्वा. पी.पी. ने तथा अन्य संतो की प्रेरणा से सुंदर आयोजन हुआ था।

इस प्रसंग में २०० जितने भक्त महापूजा, दर्शन एवं प्रसाद का लाभ लिये थे।

प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से महापूजा की पूर्णाहुति की गई थी। महाराजश्री सभी पर प्रसन्न होकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। महापूजा के मुख्य यजमान प.भ. हसमुखभाई, प.भ. बिपीनभाई तथा प.भ. घनश्यामभाई थे। (शा.चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिध्धपुर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से ता. ७-३-१५ से ता. ११-९-१५ तक श्रीमद् भागवत पारायण यहाँ के महंत स्वा. चंद्रप्रकाशदासजी के वक्तापद पर पवित्र गंगाजी के किनारे शुकतीर्थ में सर्वप्रथम पटेल रमेशभाई छगनभाई तथा पटेल मनगभाई मोहनभाई (बीलीया) के यजमान पद पर संपन्न हुई थी। कथा के समय जनमंगल पाठ के पूर्णाहुति प्रसंग पर सुंदर यज्ञ आश्रम के पंडितो द्वारा करवाया गया था। आश्रम के संचालक पू. ओमानंद स्वामी भी उपस्थित थे तथा आशीर्वाद दिये थे। इस प्रसंग का बहुत सारे हरिभक्त लाभ लिये थे। (को. स्वामी सिध्धपुर)

श्रीजीप्रसादीभूत दुमाली गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान वन विचरण करते हुए काणोतर पधारे थे, वहाँ से वाघेला दरबार भक्तों के आमंत्रणपर दुमाली गाँव में पधारकर वहाँ के भक्तों की सेवा भक्ति से प्रसन्न होकर स्वयं के हाथ की छड़ी उन्हे दे दी। ऐसे प्रसादीभूत गाँव में आज से लगभग १६० वर्ष पूर्व सुंदर हरि मंदिर का निर्माण हुआ था। वह मंदिर जीर्णहोते ही गाँव के भक्तों के सहयोग से तथा कालुपुर मंदरि के सहयोग से जीर्णोध्धार करके नया रुप दिया गया था। इस के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ता. १-११-१५ को संत मंडल के साथ पधारकर इस गाँव को पावन किया था। गाँव के भक्तों के घर पधारकर उनके घरों को भी पावन किया था। दरबारी भक्तोंने राजशाही परंपरा से भव्य स्वागत किया था। बाद में सबा में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी भक्तों में सत्संग की वृद्धि हो तथा मंदिर के साथ स्वंय के मन मंदिर का जीर्णोध्धार हो ऐसा सभी को आशीर्वाद दिया था।

संतो में पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी (अमदावाद) तता शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर महंत) ने भी आशीर्वचन दिये थे। (शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी नारणघाट)

पडुस्मा गांव में रात्रीय भागवत सप्ताह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारणघाट) तथा स्वा. पी.पी. (गांधीनगर) के मार्गदर्शन से ४५ गाँव में कडवा पाटीदार समाज के पडुस्मा गाँव में नूतन वर्ष के मंगल दिन ता. १२-११-१५ से ता. १८-११-१५ तक स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर रात्रीय भागवत कथा का आयोजन किया गया था। गाँव के सभी पाटीदार भक्त तन-मन-धन का सहयोग करके प्रसंग को सुंदर रुप दिये थे।

ता. १३-११-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारकर ग्रामजनो को खूब हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री की इस गाँव में प्रथमवार पदार्पण होने से सभी भक्त धन्यता का अनुभव कर रहे थे । कथा की पूर्णाहुति अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी के हाथों हुई थी । (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया-मारुतियज्ञ

परमकृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं यहाँ के महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी एवं शा.स्वा. आनंदप्रसाददासजी की प्रेरणा से काली चौदशको मारुतियज्ञ का सुंदर आयौजन किया गया था । इस प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे तथा उन्हीं के वरद् हाथों से श्रीफळ का हवन करके पूर्णाहुति की गयी थी । बाद में श्री हनुमानजी की आरती उतारी गयी थी । इसके बाद प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी संत-हरिभक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । संतोने हनुमानजी के पतिव्रता भक्ति का उदाहरण देकर महिमा समझाया था ।

रात्रि ९ से १२ बजे तक श्री हनुमान चालीसा का पाठ-आरती के बाद सभी को प्रसाद दिया गया था ।

नूतन वर्ष : यहां के मंदिर में श्रीराधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज तथा बालस्वरुप कष्टभंजनदेव को नूतन वर्ष के दिन अन्नकूट का भोग लगाया गया था । उत्सवी मंडल ने नंद सन्तो के रचित पदो-कीर्तनो का गायन किया था । हजारो हरिभक्त दर्शन का लाभ लिये तथा उन्हें प्रसाद दिया गया था ।

लाभ पंचमी : श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में विराजमान बालस्वरुप श्री कष्टभंजनदेव का उत्सव विधिपूर्वक किया गया था । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य माराजश्री के वरद् हाथों से श्री कष्टभंजन देव का षोडशोपचार पूजन करके ठाकुरजी की आरती के बाद सभ भक्तों को प.पू. महाराजश्री ने दर्शन का सुख देकर आशीर्वाद यिा था । कष्ट बंजन देव को अन्नकूट का भोग लगाया गया था । इन चमत्कारी देव को प.पू. आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने प्रतिष्ठित किया था । अहमदावाद का रक्षण करने के लिये लाभ पंचमी को उत्सव करने की परंपरा चालू है । हजारो भक्त अपने संकल्प की पूर्ति के लिये प्रतिदिन दर्शन करते हैं । आज के दिन हजारों भक्त दर्शन करके धन्यता का अनुभव किये थे । (जिग्नेशभाई प्रमुखश्री न.ना.देव युवक मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच द्वारा त्रिदिनात्मक सत्संग शिबिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वा. लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से तथा संतो एवं श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के आयोजन से ता. १४-११-१५ से ता. १६-११-१५ तक कोबा सर्कल, नभोई ग्राम में ४८ कडवा पाटीदार समाज की वाड़ी में त्रिविसीय सत्संग शिबिर संपन्न हुई ।

प्रातः पूजा, मानसी पूजा, धुन, कीर्तन, कथा सत्संग प्रश्नोतरी तथा नियम चेष्टा, सत्संग की दिन चर्या संतो के सानिध्यमें रहकर ३०० भक्त इस शिबिर में भाग लेकर नियम, निश्चय, पक्ष की दृढता प्राप्त किये थे । को.स्वा. हरिकृष्णदासजी तता संतो द्वारा हरिबालगीता, वचनामृत तथा हरिलीलामृत सागर का विवेचन के साथ सुंदर कथा हई थी । इस प्रसंग पर एप्रोच मंदिर द्वारा प्रकाशित ''हरिस्मृति'', की द्वितीय आवृत्ति तथा प्रातः पूजा (सचित्र) पुस्तिका का यहाँ के महंत स्वामी तथा अग्रगण्य हरिभक्त विमोचन किये थे । इस शिबिर में अगल बगल के गाँवों से बहुत सारे हरिभक्त आमंत्रण का लाभ लेने के लिये पधारे थे ।

प.पू. महाराजश्रीने फोन द्वारा सभी शिबिरार्थियों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । नवरात्री की शरदपूर्णिमा को रासोत्सव-कीर्तन-भक्ति का सुन्दर आयोजन किया गया था । (गोरधनभाई सीतापरा)

श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडा मुवाड़ी मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के स.गु. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से पंचमहाल जिला के लीमडा मुवाडी गाँव में हरि मंदिरका निर्माण होने से ता. १८-१०-१५ को पू.पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रारंभ में श्री स्वामिनारायण महामंत्र अखंड धुन का आयोजन किया गया था । जिस में बहुत सारे हरिभक्त भाग लिये थे ।

त्रिदिनात्मक विष्णुयाग जेतलपुर मंदिर के संत मंडल द्वारा किया गया था । रात्रीय कथा का सुंदर प्रारंभ किया गया था । स.गु. शा. भक्तिनन्दनदासजीने अपनी अमृतवाणी द्वारा कथा किये थे । ता. २४-१०-१५ को मूर्तियों की नगरयात्रा निकाली गयी थी । इस प्रसंग पर झाडी देश में विचरण करने वाले सभी संत पधारे थे । ता. २५-१०-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा की गई थी । बाद में यज्ञ में श्रीफळ की पूर्णाहुति करके सभा में विराजमान हुये थे । मूर्ति प्रतिष्ठा के यजमान प.भ. रमेशभाई पटेल तथा उनके पुत्र चिंतनभाई इत्यादि परिवार ने प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन करके चरण में भेंट रखकर आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये थे । पू. पी.पी. स्वामी ने मंदिर निर्माण से लेकर प्रतिष्ठा प्रसंगतक सुंदर वर्णन किया था ।

जयपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. देवस्वरुपदासजी के उद्बोधन के बाद प.पू. महाराजश्री समस्त गाँव को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । इस प्रसंग पर जेतलपुर, कालुपुर, अंजली, जयपुर, हिंमतनगर, छपैया इत्यादिधामों से संत पधारे थे । समग्र प्रंसग में जेतलपुर मंदिर के महंत के.पी. स्वामी तथा अंजली

मंदिर के महंत विश्वप्रकाश स्वामी सेवा में अग्रेसर थे । सभा संचालन शा. भक्तिनंदनदास स्वामीने किया था । यहाँ का युवक मंडल तथा गाँव के सभी भाई-बहन तन-मन-धन से सेवा में लगे थे । (के.पी. स्वामी जेतलपुरधाम, वी.पी. स्वामी - अंजली)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली - शरदोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली - वासणा में ता. २६-१०-१५ को शरदोत्सव धूम धाम से मनाया गया था । सुंदर पटांगण में श्रीहरि के स्वरुप को विरामजान करके सुंदर भव्य रोशनी में हरिभक्तोने संप्रदाय की मर्यादा के अनुसार रासखेलकर भक्ति-धुन आरती करके भगवान को दूधचिड्डा का भोग लगाया गया था । उसी का सभी को प्रसाद में दिया गया था । महंत स्वा.वी.पी.ने सुंदर आयोजन किया था ।

अंजली मंदि रमें नूतन थाल भेंट तथा मुख्य आफिसका उद्घाटन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली-वासणा में नूतन भेट ओफिस तथा मुख्य ओफिस का सुंदर निर्माण महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजीने करवाया है । ता. २७-१०-१५ की पूनम को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री यहाँ के मंदिर में पधारकर द्वार पूजन करके महापूजा की आरती उतारकर नूतन भेंट आफिस तथा मुख्य आफिस का उद्घाटन किया था । यजमान प.भ. हितेषभाई पटेल ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया था । अन्त में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने ठाकुरजी का दर्शन करके स्वथान प्रस्थान किये थे । (भीखाभाई, अनिलभाई, रमणभाई)

हिंमतनगर में नूतन मंदिर का भूमिपूजन

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वादात्मक आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा वाली मंदिर के कोठारी हरिप्रसाददासजी की प्रेरणा से पू. शा. पी.पी. स्वामी जेतलपुर के मार्ग दर्शन से हिमंतनगर में सत्संग की उत्तरोत्तर वृद्धि होने से वर्तमान में मंदिर छोटा पडने से समग्र धर्मकुल के संकल्प से ४ विघा जितनी सुंदर रमणीय जगह प्राप्त की गयी है । उसके प्रथम चरण में ता. १६-११-१५ लाभ पंचमी के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से नूतन मंदिर का भूमि पूजन विधिवत किया गया था । इस प्रसंग पर आयोजित सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी भक्तों को मंदिर निर्माण में तन-मन-धन से सेवा करने का अनुरोधकिया था । समग्र आयोजन यहाँ के महंत स्वा. प्रेमप्रकाशदासजीने किया था । इसके साथ ता. १७-१२-१५ को पाटोत्सव तथा ता. २७-१२-१५ को शाकोत्सव की सूचना दी गई थी । इस प्रसंग के यजमान प.भ. ईश्वरभाई पुरुषोत्तमदास पटेल थे । (रमेशभाई बी. पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४३ वाँ प्रागट्योत्सव मनाया गया

श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर (कडी) में ता. २३-१०-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की प्रतिमा को प्रतिष्ठित करके धूमधाम से धून-भजन-कीर्तन -रास करके प.पू. महाराजश्री का ४३ वां प्रागट्योत्सव मनाया गया । इस प्रसंग पर स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी तथा स्वा. बालकृष्णदासजी ने भावि पीढी में सत्संग बढे इसके लिये सभी को उत्साहित किया था । जलझीलणी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया । गाँव के सभी हरिभक्त इस कार्यक्रम का लाभ लिये थे । (को.श्री धरमपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर (चौधरी)

परमकृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली के देव स्वामी की प्रेरणा से यहाँ पर ता. ५-१०-१५ को अ.नि.स.गु. स्वा. करशनदासजी की पुण्य स्मृति में १२ घन्टे की धुन रखी गयी थी । भगवान को छप्पन प्रकार का भोग लगाया गया था । इस प्रसंग पर माणसा मंदिर के महंत स्वामी नंदकिशोरदासजी पधारे थे । स्वामी की सत्संग प्रवृत्ति तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से वे स्वयं अनेकों मंदिर का निर्माण करवाये हैं । श्रीहरि की कृपा तथा धर्मकुल के आशीर्वाद से स्वामी के वचन सिद्ध होते हैं । बापुपुरा में कथा के समय स्वामीने कहा था कि माणसा मंदिर का उत्सव आपके हाथ से संपन्न होगा । जो प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सं. २००० की साल में भव्य उत्सव किया गया था । इस तरह स्वामी के वचन सत्य होते थे । इस प्रसंग पर अनकूट के यजमान प.भ. मोतीजी रामाजी चौधरी परिवार था ।

माणेकुपर में श्री हनुमानजी का अन्नकूटोत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर में श्री हनुमानजी को दिव्य अननकूट का भोग लगाया गया था । जिस की यजमान गं.स्व. अनहरबहन सांकाबाई चौधरी परिवार कृते राकेशभाई थे । गाँव के सभी हरिभक्तों के सहयोग से नूतन वर्ष में ठाकुरजी के समक्ष भव्य अन्नकूट का भोग लगाया गया था । देव दीपावली को भी उसी तरह से भव्य अन्नकूट का बोग लगाया गया था । हरिभक्त तथा संत मिलकर भजन-कीर्तन-कथा किये थे । गाँव के प्रत्येक हरिभक्त दर्शन करके आनन्दित हुए थे । (समस्त सत्संगियो की तरफ से डाह्याभाई शंभुभाई चौधरी माणेकपुर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी दीपोत्सवी का अन्नकूटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हार्दिक आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर के उत्साही नवयुवान महंत शा.भक्तिनंदनदासजी के मार्गदर्शन से नूतन वर्ष से पांच दिन तक प्रतिदिन प्रातःकाल

बड़ी संख्या में हरिभक्त मंगला आरती से श्रृंगार आरती तक धुन-कीर्तन करते तथा शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी प्रतिदिन प्रात: काल कथा का लाभ देते थे।

नूतन वर्ष में ठाकुरजी को भव्य अन्नकूट का भोग लगाया गया। जिसका दर्शन करके मोरबी शहर के लोग तथा अगल बगल के गाँव के हरिभक्त धन्य हो गये। प्रत्येक एकादशी को सुंदर कथा होती है। जिस में बडी संख्या में नर-नारी लाभ लेते हैं। प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वामी सत्संग संवर्धन की सुंदर प्रवृत्ति करके हरिभक्तो को खुश रखते हैं।(कोठारी रमेशभाई)

विदेश सत्संग समाचार

अमेरिका पियोरिया चेप्टर (आई.एस.एस.ओ.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से अपने आई.एस.एस.ओ. पियोरिया चेप्टर में दीपावली को ता. १५ नवम्बर को सभी हरिभक्त साथ मिलकर ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूटोत्सव किये। भगवान को घास की झोपडी में पधराकर भव्यातिभव्य अन्नकूट का भोग लगाया गया था। साक्षात् अक्षरधाम जैसा प्रतीत होता था। संत कथा का लाभ देकर सभी को संतुष्ट किये थे। पियोरिया तथा अगल-बगल के २०० जितने भक्त दर्शन का अलौकिक सुख प्राप्त किये थे।(रमेशभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर इटास्का -शिकागो दीपावली अन्नकूट (आई.एस.एस.ओ.)

भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से इटास्का श्री स्वामिनारायण मंदिर में नूतन वर्ष के मंगल अवसर पर ११ दिन तक श्री हनुमान चालीसा का पाठ किया गया था। शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी के व्यासासन पर श्री हनुमानजी महाराज की कथा की गई थी। काली चौदश को श्री हनुमानजी महाराज का पूजन करके अन्नकूट की आरती की गई थी।

नूतन वर्ष को मंगला आरती का दर्शन करने के लिये हजारो हरिभक्त आये हुए थे। प.पू. महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का नूतन वर्ष का सभी को आशीर्वाद मिला था। प.पू. लालजी महाराजश्री का भी सभी को आशीर्वाद मिला था। सभी लोग आनंद का अनुभव कर रहे थे। सभा में महंत स्वामी तथा पुजारी स्वामीने सभी को नूतन वर्ष को आशीर्वाद दिया था। दोपहर में अन्नकूट का दर्शन करने के लिये सभा में खूब भीड हो गई थी। अन्नकूट की आरती के बाद शयन आरती तक महाप्रसाद की व्यवस्था की गई थी। शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी तथा पुजारी स्वा. शांतिप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में तुलसी विवाह का सुंदर आयौजन किया गया था। यहाँ के मंदिर में प्रत्येक उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। सभी हरिभक्त साथ मिलकर उत्सव का आयोजन करते थे (वसंत त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नोर्वोक-एल.ए. त्रिदिनात्क दीपावली महोत्सव (आई.एस.एस.ओ.)

यहाँ के नोर्वोक श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आश्विन कृष्ण-१४ से कार्तिक शुक्ल-१ ता. १०-११-१५ से ता. १२-११-१५ तक त्रिदिवसीय महोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। आश्विन शुक्ल-१४ को हनुमानजी के पूजन का लाभ बहुत सारे हरिभक्त मिले थे।

दीपालली को ठाकुरजी का षोडशोपचार विधिसे पूजन किया गया था। पूजन विधिमहंत शा.स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी (मूली) ने करवाई थी। प्रात: ५-०० बजे अनेकों भक्त मंदिर में आ गये थे। मंगला दर्शन करके अन्नकूट बनाने की सेवा करके ८ बजे श्रृंगार आरती का दर्शन करके दोपहर १२ बजे अन्नकूट आरती की गई थी। सुंदर अलौकिक रोशनी में ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन करके हरिभक्त भाव विभोर हो गये थे। जयश्री कृष्ण स्वामीने सभी को श्रृंगार का दर्शन बड़ी दिव्यता से करावाय था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी भक्तों को फोन द्वारा हार्दिक आशीर्वाद दिया था। प्रात: ५-३० बजे से लेकर रात्रि के ९-०० बजे तक दर्शन के लिये भीड़ लगी थी। एक हजार से अधिक हरिभक्त दर्शन करके महाप्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव किये थे।

दीपावली को ठाकुरजी के अलंकार की सेवा प.भ. पटेल कोकिलाबहन नटुभाई पटेल की तरफ से हुई थी। नूतन वर्ष को अलंकार की सेवा डाही बहन जेठालाल चि. विरेशभाई तथा दिनेशभाई इत्यादि (डांगरवावाला) परिवार की तरफसे हुई थी। प्रबोधिनी एकादशी को तुलसी विवाह का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग के यमजान (भगवान के माता-पिता मधुबहन नंदलाल मकवाणा, चौधरी दीपिका बहन सुरेशभाई (वृंदा देवी के माता-पिता) (मामा) गं.स्व. सोनीबा चौधरी आदि हरिभक्तोंने लाभ लिया था। रात्रि में ९ बजे तक उत्सव का भव्य आनंद लेकर हरिभक्त स्वस्थान गये थे। (प्रमुखश्री देवराजभाई केराई)

कालुपुरधाम कोलोनीया प.पू. महाराजश्री का ४३ वाँ प्रागट्योत्सव (आई.एस.एस.ओ.)

श्री नरनारायणदेव श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुरधाम कालोनिया में शनिवार को विकेन्ड में विजया देशमी को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४३ वाँ प्रागट्योत्सव अयोध्या मंदिर के मूलजी भगत तथा हरिभक्त मिलकर मनाये थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री की प्रतिमा को रखकर सभी भक्त धुन भजन-कीर्तन समूह में किये थे। मूलजी भगतने प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा धर्मकुल की महिमा का वर्णन किया था। धर्मकुल का जीवन सत्संग के लिये समर्पित है। उन्ही से सत्संग का विकास है, प्रचार-प्रसाह है। इस अवसर पर

समूह जनमंगल का पाठ हनुमान चालीसा के बाद संध्या आरती-महाप्रसाद एवं बहनो द्वारा रास का आयौजन किया गया था ।(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन (आई.एस.एस.ओ.)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा महंत स्वा. भक्ति स्वामी तथा नीलकंठ स्वामी के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से वर्ष की अंतिम रमाएकादशी का उत्सव सभी ने मिलकर किया था ।

सभा में धुन-कीर्तन समूह में किया गया था । संतोने धीरजाख्यान ग्रंथ में अनेक भक्तों की कथा सुनाई गई थी । यजमानश्री उषाबहन तथा प्रवीणभाई ने जनमंगल समूह पाठ किया थआ । हरिभक्तो ने दर्शन का लाभ लिया था । हनुमान चालीसा का समूह पाठ किया गया था । संतोने आगामी उत्सव की जानकारी दी थी ।(प्रवीण शाह)

छपैयाधाम पारसीपनी में विजया दशमी उत्सव (आई.एस.एस.ओ.)

श्री स्वामिनाराय मंदिर पारसीपनी में विजयादशमी को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४३ वाँ प्रागट्योत्सव भव्यातिभव्य ढंग से महंत स्वामी सत्यप्रकाशदासजी एवं हरिभक्त मिलकर रविवार को साम को मनाये थे । आज के उत्सव के यजमान के साथ महंत स्वामीने प.पू. महाराजश्री की प्रतिमा का पूजन करके सभी को आनंदित किया था । महंत स्वामीने सुंदर कथा में धर्मकुल की महिमा सभा में समझाई थी । सभा में धुन-भजन-कीर्तन का आयोजन भी किया गया था । सेवा करने वालों का सन्मान भी किया गया था । अन्त में जनमंग पाठ, संध्या आरती तथा शयन आरती हुई थी । सभी लोग समूह में प्रसाद लिये थे ।(प्रविण शाह)

मूलीधाम लुईवील श्री स्वामिनारायण मंदिर (आई.एस.एस.ओ.)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी, शा. व्रजवल्लभदासजी, पुजारी स्वा. हरिवल्लभदासजी की उपस्थिति में सभी हरिभक्त मिलकर विजया दशमी को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तस्वीर का ४३ वाँ जन्मोत्सव मनाकर पूजन-अर्चन करने का लाभ लिया था । संत धर्मकुल का माहात्म्य समझाया था । सभी हरिभक्त सेवा मे लगे थे । आगामी उत्सव की जानकारी दी गयी थी । समग्र प्रसंग में पटेल ब्रधर्स वाला श्री विपुलभाई तथा दिनेशभाई पटेल की सेवा सराहनीय थी । धुन-भजन-कीर्तन आरती के बाद नित्य नियम किया गया था ।(प्रविण शाह)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

कलोल : प.भ. पटेल सीताबहन अमृतलाल (भगत) (उम्र ७३ वर्ष) ता. ८-१०-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासिनी हुइ हैं ।

सुरेन्द्रनगर (सुदामवडावाला) : प.भ. सोनी व्रजलाल मूलजीभाई राणफुरा ता. २४-१०-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अमदावाद-एप्रोच-बापूनगर : मंदिर के श्री गणपतिजी-हनुमानजी के पुजारी प.भ. गोरधनभाई हरिभाई वेकरीया (उम्र ६५ वर्ष) ता. ३०-१०-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अमदावाद : प.भ. शेलडीया सविराबहन गोविंदभाई (उम्र १०६ वर्ष) ता. ३०-१०-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुइ हैं ।

रामनगर-कलोल : प.भ. अंबालाल साकलचंद पटेल (उम्र ८५ वर्ष) ता. ९-११-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

हाथीजण : प.भ. जयंतीभाई पटेल (कालुपुर मंदिर कोठार ओफिस) के श्वसुर श्री पटेल मफतलाल कोदरलाल नूतन वर्ष में ता. १२-११-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

धरमपुर-रवारवरिया : श्री नरनारायणदेव की अडिग निष्ठावाले प.भ. जादवजीभाई रामजीभाई पटेल की धर्म पत्नी कांताबहन (उम्र ७६ वर्ष) ता. १६-११-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुइ हैं ।

लेस्टर-यु.के. : प.भ. माधवजी लालजी काचा श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अमदावाद : प.भ. देवेन्द्रभाई मणीलाल गज्जर की धर्मपत्नी अ.सौ. भारतीबहेन ता. १९-११-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासिनी हुइ हैं ।

माधवगढ : प.भ. पटेल केशवलाल प्राणलाल (उम्र ७६ वर्ष) ता. १८-११-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

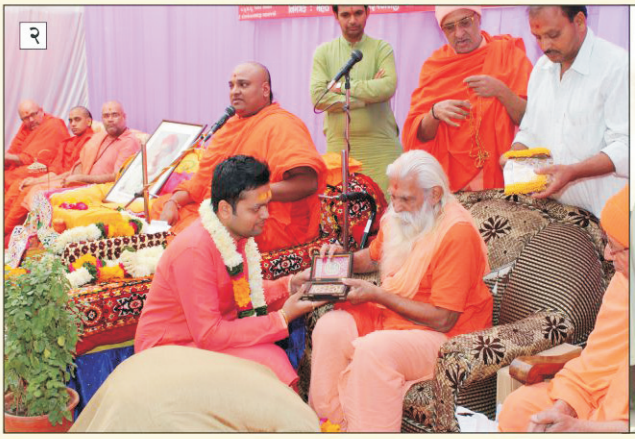

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर नाथद्वारा का १५ वाँ पाटोत्सव प्रसंग पर पू. महाराजश्री की आरती उतारते हुए यजमान परिवार तथा सभा में आशीर्वचन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (२) पाटोत्सव के यजमान परिवार का सन्मान करते हुए जानकीवल्लभ स्वामी । (३) सिध्धपुर मंदिर द्वारा पारायण प्रसंग पर पोथीयात्रा में संत हरिभक्त । (४) ईश्वरपुरा गाँव में कथा का रसपान कराते हुए शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) व्यास पीठ का पूजन करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

५ वाँ स्थापना दिन

फाल्गुन शुक्ल - ३ ता. ११-३-२०१६

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में काली चौदश के दिन हनुमानजी का पूजन करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा दीपावली को मंदिर में भक्तों की भीड । (२) लाभ पंचमी को कांकरिया मंदिर में महाप्रतापी श्री हनुमानजी का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में आनंद स्वामीजी ।

પ.પૂ.ધ.ધુ.આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી

શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાનનાં ચરણ કમળથી અંકીત મહાપ્રસાદીભૂત શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર નારાયણઘાટના

૨૦માં વાર્ષિક પાટોત્સવ તથા મંદિર જીર્ણોદ્ધાર નિમિત્તે

શ્રી ઘનશ્યામ મહોત્સવ

શ્રી ઘનશ્યામ મહોત્સવ 20 શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર - નારાયણઘાટ તા. ૨૪ થી ૨૮ ફેબ્રુઆરી - ૨૦૧૮

તા.૨૪ થી ૨૮ ફેબ્રુઆરી - ૨૦૧૮

સંહિતા પાઠના યજમાન :- રૂા. ૩૧૦૦૦/- ● સમૂહ મહાપૂજા :- રૂા. ૨૫૦૦/-

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં ધાર્મિક આયોજનો

મંત્રલેખન	: ૨૦ કરોડ શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્રલેખન
અખંડ ધુન	: ૨૦ (વીસ) અખંડધુન ૧૫૬ મિનીટ
સત્સંગ સભા	: ૨૦ સત્સંગ સભા "શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર ન હોય તેવા ગામડાઓમાં સત્સંગસભા
પદયાત્રા	: ૨૦ પદયાત્રા પોતાના વિસ્તારના મંદિરમાંથી નારાયણઘાટ મંદિર સુધી પદયાત્રા
પાઠ	: શ્રી હરિસ્મૃતિના ૨૦,૦૦૦ તથા શ્રી જનમંગલ નામાવલીના ૨,૦૦,૦૦૦ પાઠ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં સામાજીક આયોજનો

અનાથ બાળકોને ભોજનદાન/વસ્ત્રદાન	૨૦૦૦ બાળકો
વ્યસન મુક્તિ અભિયાન	૨૦૦૦ યુવાનો-વડીલો
વૃદ્ધાશ્રમના વડીલોને ભોજનદાન/વસ્ત્રદાન	૨૦૦૦ વડીલો
વૃક્ષારોપણ	૨૦૦૦
સર્વ રોગ નિદાન કેમ્પ	૨૦ કેમ્પ
રક્તદાન (બ્લડ ડોનેશન)	૨૦૦ બોટલ

સ્થળ
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર
નારાયણઘાટ, અમદાવાદ

આયોજક : સ.ગુ.સ્વામી શ્રી દેવપ્રકાશદાસજી - મહંતશ્રી નારાયણઘાટ
● સ.ગુ.શાસ્ત્રી પી.પી.સ્વામી - મહંતશ્રી ગાંધીનગર (સે-૨)
તથા સમગ્ર સત્સંગ સમાજ એવમ્ શ્રી નરનારાયણ દેવ યુવક મંડળ, નારાયણઘાટ

Praful Kharsani